॥श्रीगणेशायनमः॥श्रीसरस्वतीजीन
मः॥ अथपारासुरकृतधर्मचन्द्रोदयग्रं
थनंदनभासालिख्यते॥दोहा॥गनपति
दिनपतिगवरिपतिश्रीपतिसरस्वत
न प्रनवौंपदपंकजप्रथममंगलजयश्री
जगदेव १॥गनपतिस्तुति॥छप्पै॥भर
तभालदुजकांतिजालप्रतिपालदास
सुख॥परतपाइजनकीसहायसबदाय
हतदुख॥नरषसिद्धिवसनवोनिधिक
बुधिविमलअति॥भरतभरेमदधार
नि सरनिसकभिलेनकरनिगति॥मंडन
महेसकुलकेमगाढ़॥ अघखंडनकुमति
हरत॥कविजगतजुगलकरजोरिकैसो
रिसीप्रवंधनकरत २॥द्विजस्तुति॥
॥अथसंतुष्यमारंभः॥हेमाचलपरव
तअगनभारा॥कैसोकवहैभूभरसमे
गागनवहुतदेवदानवअनूपातिन
कोजुलैसैआभायस्वरूप॥जासध्य

धर्म० ०

छितयेकारककी निश्चितहैआसजोन
हमवीनतीनकौजुमुनीखाजेमहान्
तिनसमयुमलकौन्हजआदार ॥ दो
हा ॥ मनुष्यनकेकल्यानकौ कर्तीधर्मस
औरवर्तमानकालिजाविय हैहेत्वधम
ीहार लोचाचारत्वधर्महै ताहीकौमुन
माज सत्यवंतीकेनंदनुम कहेआपम
हाराज ॥३॥ ॥ छंद दैहरी ॥ धर्मजातिके
कोचितचाहे ॥ जिनकेमनमेंअधिक
उछाहै ॥ मोसेजीकेमनोमहान ॥ तिनइ
हकौनमम्मतिध्यान ॥ तब्बहसत्यवती
केनंद धर्मधाम आनंदकंद उन
केचाहहितआतिवचितवचनउचा
रनहेतवहकोन ॥४॥ हेद्विजउत्तमहोसु
नत्वेहु सर्वधर्ममैनाहेसंदेह ॥ मजानत
हुतउत्तमनोगपहमतमुकारतेआवेइह
जोग वहजायकाकैपितुप स चित
आपनेमहाराजनाम नमसकारकी

हे तिरनायाक हिहै प्रसइ ही चित्तचाइ॥
॥ सुंदरछंद ॥ तिह समय संत लोमस [?]
न उवाह निज धर्म रह जानत सुचारु क
रि वेदव्यास कृष्ण पनामा॥ जिनके सुचित्त
लिये सानुराग॥ ज्याते सुचित्त मनुन ही स
मात॥ भाख्यम सवहि कान पै जात॥ छ
मे कवडिका श्रम सुहाय॥ वस्त्रै कलू [?] न
नाम काय॥ सो नित सुफूल फल जो सुवेस
वृक्ष कलित नदी नीर कोस देसा॥ नीरयपु
वित्र कौ हनपार॥ सो नित सुपर्वत हिम्मल [?]
कार॥ ७॥ ग्रामरग सम हकारिके सुजान सु
थ्यान देषिन लेहा तिसु किंनर गंधर्व जाह्नन [?]
हा सिद्ध जह॥ करन नित्य गीत वेष्टित सुमु
ह॥ ताको जबसै सिज्जन करत य॥ जीनकी [?]
जस ताके मध्य सेय॥ एक शक्ति नाम मुनि
है महान॥ जिनके सुपुत्र जानो सुजान
पाराशर नाम है प्रसीद्ध॥ जान तिहै जो कि
भव
सिंधु हि पितर हे हो यक्ष पूर्वजान॥ जि

धर्म०
२

नकोजुमहातमकौहिमालआवतमु
अगमामुनिनमजाबहुजोमिरतउ
हीकाजावतजपवतीसानीयाल
कहिकैमनामचितधीरजलाहासकति
कहिमतिसुजानकहितहिकविकहत
जामनचितकिपैनाषानामनयेहु
हमनपितपालकजीनातिनकोसम
मुकतजुबहुदमतिआतमबीनपि
हालिवनकोमुकसमाकालिजुगविषै
सुजानाआनोमानमसीडिज जिनको
धर्ममहातमा [illegible] आनचारि
बरन आश्रमसाधारि जिन जथाजोगु
धर्मद्दिडचारी आनजनासकोकर
विलंबाआछेजुमनीमहंतकंदाजि
नकोमतिसुजनमहितमीतिकरतादुजु
बातबहीताजा १ कोदिहपाकाधारि
जलासजनजजोआगमनतुमहिमा
माजैमुनिसमाजप्रेमसहमहातना आदर

उभ्यसकौकरिअज्ञान।पुनिकहतयारि
चितमैंआनंद।मलजुबोआगमनतुम
हिनंद।चौतर्फोरिसीजबहेमऊधा।कारता
नजुवाखिगतमांसहिं।जनसुफोकु
ललानवेस।पुनिकहीउन्हैंसललातपे
सवहमासधर्ममतिचितलीना।नवप्रहे
पासुआतिहीकीना।१२।अकिनृतसुजोलै
हकरितेममनकोअज्ञान।पिताधर्मह
तोममदोसवसुहृकहौवरवाना।१३।
छन्दपढ़ेरी।।ममआजअनुगहजोत
जेयातवकहताम।मजीसनैतेयसेमा
नवमुनिकेकहधर्म।सबकियेअवनह
मकर्मकसौ।पुनिजोनालिखअवकोन
कामिपमु।विसअरुनगंजोना।गौतमगो
पालआदिवखाना।इकमुलीविमुसव
तजानि।असदहिआगिश्यमुनीललला
माकनिलयेधर्मइनकैतमाम।तातनप
नामाअसकहीतापुनिजागपवलिकस

लिहितमोति। अहल्यापतंमुनिक्ष
नविचार। सोकियेअवलेहमधर्मसामु
निसंपनिश्च। अहल्यासेसजा। गौतिअम
अहल्यातिकिषै सोग्नि। स्तोधनमुतिक
नमुजोइ। सावेतमनाभुतिवेसजोमु
तधर्मनाकनमेदेव। सुतिक्योगमाय
नकोवयानी। अमवेदअर्थकोलियो
जानि। मानवसुधर्मसुमनअवसाकोनु
मनुकवाधर्मसो सवीन। नतिजुगमो
ओवेनानाय। हापसुतनिजुगमेर
हम। आचारधर्मकलिजुगहिमाहम
लिहो। महक्यकोवैलयनना हिसो
चालिनिर्णकोल्यजोग। सामहनहेसो
कहो मोहि। हकनोयसजवमान
हेवानहिरचेतुनिनेमपुसनेम। मैपे
जुपासमपगाटमेनननवकेहमाय
मतिहेहैलोन। ५। दोहा। अवनुम
निर्णयधर्मको। प्यूनओरविस्तारस

जातही मै कहत हों। मूल पत्र कथ सार।८
॥छन्द पैधरी॥ जतनन सहित सब मुनी
महान। श्रवण। कीनो निज धर्म सजान
कल्प कल्प मैं न्याय अरु दृढ़ि विसा
विलम है सरासिद्धि। तिन तैं श्रुति स्म
ति हू वेस। सदाचरण हू धर्म है मेसा। ही
ण और हू उत्पति होय। करता और बेद
न हि कोय। कमलासन हार विधि
जानि जैसे हि इह धर्म महान। कमलास
न जो है सुखदाय। कल्प कल्प मैं का
न रहाइ। सम भयन के सत जुग मैं धर्म
अरु त्रेता द्वापर मैं कमी। पुनि कलिजु
ग मै और ही होत। ऐसे जुग जुग औ
तउदोत॥ दोहा॥ सत जुग तप आ
ख्यान है त्रेता मध्य सु ग्यान। द्वापुर ज
ग्य सकारे कैत है। कलिजुग दें बलि दा
न॥ छन्द पद्धरी॥ मानव सुधर्म सति
बताइ। गौतम मुनि ने सत्रेता कहाइ

समसंसलिलत ग्रापुत्र चार। कलिमा
न पाप कर्कोयेसार। १८। इक कोबादार
वापुन्यियेधि। सतिजुगहिमाहियाको
जुकेमु। कहिसतहेसमेतिही। कालिमे
नसुदुःखौलेतासुमाल। त्रिजतामसध्य
सुलिवेपलीन। हैजात आगविनजलवद
नजुगक्रूस्यो। तापुन्यपीतनाधिना
वेसमेवहातिमि। जतिजुगलमध्यइहसु
मे स्याम। कहिकलिमांको। नगातपाप। १९
सतिजुगहंजा रतकिये। जपपुन्यक्रा
जात। त्रेतऊवाहेयतलेगी। इहैंबात द्विप्ता
जा। २०। कपुन्यतप्रदानकियो। समान
तरतिजातइहहलकलिजुगपातिकक
तिनै। पापलगत। २१। हि। २। स्यातत
छिनहीलैवो। सतिजुगमेजगाजोय त्रेता
मेदरादिनतमे। आसायतोहोय। २२
द्वापुरमेइकमासमे। होतआपको आव
वरमेदिनकलिकालमे। लगतआप

कोदावार ३॥ अधर्मजो सोधर्मको
मिथ्या जित सति सोय॥ शासन जो नरराज
मयेनारिन जितपति होय ३४॥ छंदप
द्धरी॥ याकलुमांहि महिमा हैन जोय॥ अत
न्याति होत सब मिथ्या होय॥ गुरुदेव पू
ज्यो होत हिंजा॥ अबकहूं जोर कलिका
न चिन्ह॥ विन ही विवाह जनिता विचार
हैं है प्रहतिकन्या कुमारिरूपा॥ जुगजुग
ही मास जो धर्म देवालन मध्य पाइ सो दि
खपे विकरजो नताइ को निंदवै भा॥ जुगजु
गन सारहुज होत ऐसो नारह॥ जुग जुग न
मास लाम पर्जोय॥ वाको मुरलीन जो क
ही सोइ॥ सोकहे पराम सुरमुली मे सा॥ अन
रूप पाय सा चित सुहेय विकारन सुफेरि
करिनु विचारि॥ जाते सहोत अधको
उतारा॥ अब नहै धर्म तिन्ह के जुवेस॥ अ
नुचितवन करि कै कहूं देस॥ तिन ज्यारि
वरन करिकै सुजोग॥ अब कौ अवन

धर्म० ५

सुनिमुनिमनतोरस ॥२७॥ दोहा ॥ पापासुर
मनहिमेगाद ॥ पुन्यपवित्रनकाजे ॥ पाप
नकोइहपुनहिमेहि कातहि ॥ हैनासर ॥२८॥
द्विपुनहिताचित रताकियो ॥ धर्मथापन
हेत ॥ पारा कामुनिमित्रिक्रम ॥ पुनगास
धारीमेत ॥२९॥ अंचुचरी ॥ इनचावेन्दवे
धर्मकाहि आचारपालनाकरतताहि
आचार शुद्धि जो देहजोह दानवपापे
सुदृढमेहोय ॥ सुनजोनेहतजनमप
इन्द्रकोतपोकवितिरता ॥ह॥ आसदे
दस्नानिय हजे विचार ॥ इतमेलनोजको
कानहार ॥ इहीतप्रीतिमोकोकोइ ॥
कसृजनिमिनदहिपनहे ॥ ३० ॥ पट
कर्मकोजनहेजानकहे ॥ य ॥ होमयकस्य
कदेहीकनाय ॥ कानेमथमन्नानकरि
धेमहान ॥ प्रातिद्वितीयवोमनध्याविध
न ॥ जपनतीयहोमचोथोवताय ॥ आ
धेनवेदपंचमकहाय ॥ सुजनसुदेवव

ट्कर्मजानि॥ द्वै औ रहे सुजगालियेमा
नि॥३१॥दोहा॥ वैस्वदेव पूजन अति
थ्या हतिलकोसुनलेउ॥ ह हदिनप्रति
तिदिनषट्कर्मको॥ विमलकेमहाराज
३२॥ विप्रहो हूं द्वै सौ नतै म्रमपंडितहो
ह॥ वैस्वदेवनसुकर्मसो जोकहूं आयत
हे सु॥३३॥ छन्द॥ वह अतिथ्य मिलत
ति हसमयमाहि॥ सोस्वर्ग दीनलंदेहना
हि॥ आयो जु दूरि दिसतेजु कोइ ववहथ
कितपंथमेंरहोहोइ॥ भूषो जुदेवसम
येसुआना॥ वाको अतिथ्य सुजानो
सुजान॥ कोउ प्रथम अ आयो आपु
तोइ॥ वाको अतिथ्य नहिमानौ धीर
३४॥ वैसे अतीथ्य को इहीभाय॥ कि
यौ त्रवरा॥ पूछो न लाहि॥ वाकौ नपू
छियेवृतिवेह॥ तामैनमाह्लिनतवीन
हि देदाकविअमानजीवमेंहेजानि
यो अतिथ्य सर्वसकामइमानि॥३५॥

रुकोगाविकलमनसोअतिमनाहिरहस
मसकैहृतिजवितमाहिनेनहोहूसा
प्रबंकतामुदेखतिनरहोकैतसबहु
लोसबलोऊसमयपाइकोगोहिआइ
जाकोअतिश्यजानोमकनाइ॥१६॥
॥चोपई॥ रुकोबतभारीविप्रकहोइ
जायअभूतसंपाओइ अरुकाज
तोराजकोजानि वेकवेदआसीनि
तिमानिरुतीसुहिनप्रतिदिनसोइ
रुनाहिअभूतसंपादोइ वैसदेवसम
येकोमातीविभुकप्रापतिहूनोजबाहि
वैवेदनकेजिमततुआरकनेबहूतमो
तिसेमावरहचितमेनतिनमिप्रवीन
विभुकवह्रीविथजनकोन॥१७॥अ
तोवृक्षआचारीचाइ दियोनहिप्पक
नसकतामउनदोउनकोकछुनदोम॥भ
दतअनआपकोलोनानाहीमनहली
येहीरीति चंद्रायनवृतकोसमीति

नववहसुद्धहोयमनतेहू।याजैकछुना
हिसंदेहू।इपाजतीरजत्र्यावेगावीनाम
थमेहस्तमेजलकालीना।पिरपीछेम
दातिहिदेहू।वहू।विवाकिसेकालेहू
मिदा।जेमेदइजोहैय।मातुमेतुल्में
मोइ।अनवहनीरदयेकरपानी।सागत
तुल्सतमहिकोजानि।जैसद्देवऋमहोय
मनोगम।विदुकदूरिकरतहैजोगाकि
हुकदोषनकुकानिजीर।जैपदेवक्रम
कोहेनवीग।तातेजलतमहिलमननेहाथि
हुकाकोविस्वापुनिदेहू।इपीजोवहवि
मुजगतकेमाहि।जैपदेवत्र्यमकाहि।
ह्यो।जोजनकेहितवेजितना।हिमदन
अंतकालनहिताहितकोहेतुनो
सवकोहू।वाइसजहूया।मापतीहोयम
लागपरवेसाचराधिहि।जोजनकाहेतु
नोतोविरा।अमदक्षिनदिसनेमुखराखि
नोजनकतजभानजीलीवामहि।अमदवा

यदपादपकोमेलिकोउभोजनकरतमै
कैतेप्रामैकछुसंकैहैनाहि॥बैभोजन
ग्रहिसकाहिंजाहि॥५॥कैकरतजतीकौकं
चनदानग्रहनकारिकौनागरपानत्र
मयत्रोकौवैदि॥प्याता॥मोदानीनरकोन
कोजातु॥७॥भोरहोइचिंडाजतुकोइ
मनुपिकृध्यानमेंरोइ॥बैत्वटेवसमयमे
जाइसोनहिंअतिथदर्भलेजाइ॥४२
मुनिकाछजारहुजातोंतजेवहनवीव
जगावाइदीन॥सतयडाछतकहेमीता
हि॥अतिथीनजासपूजिजाइ॥रहेउ
नरहतीमतीमहंततवबहेहैमातिथ
करहंनाह॥४३॥कोउअतिथअगतजास
जुहोइजापुरसेतेहतैगयोकोइनाके
जुमोहकोअंनदान॥फिरीसुपनपाव
समान॥फिरनहिंनकीतहैकेमनाइ
इहसमकितेहुलिजचितमाहि॥४४॥सत
काविमनहींअतिथकीन॥अमलत्री

दीनापुनिआपनोज

श्रीसुंदरसमेतं॥
सपूतजोसुतहोयमा॥

नहूं

सुनाय॥ कुल के कुकर्म तैं नही पाय
स अज्ञात जो लवान॥ नहीं जे
मिलत अमात्य मदक्ष मौं तै
तब ज्ञान को नही होइ॥
कवाना महबी सो मौ गो महान॥
फूल सौ है है जानि
हि हृदि मातौ सुडोम
कातौ क्षता हिं को हो हमैं स मति
कंसूलप हे अमारि मनि हत्र
हृदि चार॥ पुनि लोज्ञ तन बचोग्र
भाति पालन तन को कार जाय॥ विवप
क्ष सौ का जंबक है वै स्पवज्ञ
हे मैं सोऽ८॥ अथ पुरुषा मो॥ अवपु
धर्म सु निय मवो नाहु जन सु समाव
ज्ञात कौ नाइ हपमें धर्म ही को बताइ क
छु कौ अनि था निफल जाइ॥४९॥
दोहा॥ कृपातैं न मधून कहि क्षिप्रत ग्रं
काल हूं धसकनाइ॥ तौ वसु वैचो मनै ८

जथाम मौ नही जो प्रहे वे बनो
मै भेद। कउ दोयता को सनो ॥ इकमदि
एइक भेद॥ ५१ ॥ छन्द चैपरी ॥
आगम्या गौना। करतड रत ऋहि परा
मौना कोउ करन ता को स्ना श। सो बह
मरक मै जा श॥ कवि॰
गमन ब्राह्मणी के संग ता न्म।
रनकौ
मापर ॥ इति श्री पारासुर धर्मसास्त्रे
व्रोदय प्रथममयू ब्लसमाप्ता ॥ १ ॥
ति स्फुनहस को॥ धर्म
चार। लोक लिजुग मे वानि सके
विचार॥ १॥ छन्द चैपरी ॥ अव
न कह महान। पारासुर कन सनो महा
ना। मटू कारमन मे रतदुज रजा। सती
का उसक भसाजा। भा ठन्य
होइ। उतमता हि कह सर्व कोइ
मनन को मध्य मजा नि। त्पा

अभ्रमवमाना॥ मैथवअमहल
अप्रांतकपातकेहेगाय॥३
मनक्षेमाजा॥ माहेलैहोतारहडलाज
मतपासैलब पाना॥ प्रकोहाइऊमाहि
नवमा॥ त्रि॥ प्याप्रिडुतेत्रमलः
प्र॥ मोपाप्रहो॥ शिवघ्रततताहि॥
ग ऊंगक्षे॥ मोइ॥ न्यायैहूपोतदाजिहि
होस्रावस्मितअंडहोतिहिलाज॥ वहिवस
मकौनबहुअराज॥ मैयफहरनोहेकहे
श्रीति॥ विष्णुमानकौइहिरीत
कौदेवकौमैन॥ हवनकौफिरिवह
दिव॥ संताप्रेमाकै श्रमास
जतीनजनास॥ अथवाप्यारिविप्रकौं
नाहि॥ दीजैभोजन नविकराम॥
मजमनकविजोइ॥
श॥ ह॥ वा॥ होआपवैतकारिमंतानदा
ताइमै अंन॥ संचितहोयताहि (म
नापंचजापअनुदह्नाकीन॥ पंच ए

सोकरियेतिनि॥कतुदस्यासो
॥७॥सेतिलदुजवेचैनहिताहिमान
समठहाग्रुसेयकतयेदुज
केवकुकेचकुकाथ्राभश्री
ताग्रुपातकजेमेकासदीनमाहिलो
जदीवसपुसहलजोमुभथजीनेवे
कोइालाकौलगेवहृहिवहपाप
हवैकालेजानैस्नापाये॥छन्दपद्धरी॥
पुरसपासिमानलकहाव
तमछीसकजावातुनिहेमलीकारी
जलनहरिवोहिल्माचेजलतु
कीमूमिवाग्रुरहणजपातकीसमकह
कतियेमहलकीरीतिजोइ
पतितमतिहीहोमातिकहूंसवेकतिये
नाइकजानकूटिवोमथमजाति
स्नंनपीमिकोदुलियसोग्रुकि
सोइत्रितियजोयजलकोनताहिसच
पंचमजुमतिनिदेतकोइ॥१

धर्म० ९०
जोहेसुखसम्कालिकातेहाव
मिकैछेदडावाहनतैंजुमेद
समकोटमाद्विमोसौवीनाममैजे
ननकवलहायाः निद्विजमकननजाम
मिकयाथलिकार १०
नवेतथमनाझतोवा१ कजुगलिमलव
तजोविमसामानाद्दीयो
मामताडुनिवासीमानवीसा
पानिहिबौकोमधानलवातपाप
कल्पातथदयालि हलीनयापनाम
मानाबलकमीकालनहारोसकतेइ
विनामनामपकौजदेगजु
बताविश्चियलीरामारेतुजदानाले
मीकानतनौपाप
नक्षाप १४ इकपालिहैनवाोवतार
स्मायेछिवातककहाइ
दिहिंसकवमानि असमायामस
नरयतजानिमाक्रसीकर्मन

रहपञ्चपातकीममकहा ग्रप ।। इति
विप्रधर्म ।। दोहा ।। क्षत्रीहेतेतीकरत
ओरदुदेवा । अन्तआ । हिद्रजानक
करमवनकीसेवा । १ । चौ० । इसबहित
सेतीयो । तउसदोश ।। सिल्पकारमह
कोयमलैसबकोग्रा ७ ।। छ
।। सदहोयसोल्हकारमनीम
सेवकसबकुनहीकीना ।
ति ।। परतनरकमेजायश्रहेशा ८
धर्ममहात्मा । इसजानतनक
ति ।। जनममरनकोमोचसजो
सद्धलौहोयगा । सोसबकइस
मानतभ्रुहमिपुरुसमतिमान ।। १० ।।
सोचतेमुकतजराजानिले
ग्रादरूवेदीनहुरात्रकी
होय ।। ११ ।। क्षत्रीद्वादसदिनसमे
सवसानि । सुटहकइकमासमे
मानि ।। १२ ।। पन्दनामसकतजो

० जोइ॥मनकोमहुआहोइ॥ तवकोमे
मानदेवमुनि॥कोस्रामियरिसमुदहे
जनम॥उनिकघोसोध्यानकवयानिद
मुहिवसमा॥नहुअजन्मजानि॥ चनीड
मदफेदिनमुआइ॥ भावेमयेकपव
मेकहामाघुनिराहिमुद्रकोरीतिजोयि॥ इ
कमासजासतवमुसुहोम॥ हुजराजस्वामि
हेश्रीसदेस॥बलासावेककोहावेस॥इ
कदिवसमाहिकविजरानजाइ॥ गतिउ
मदता॥हेतताहि॥ केवलकेवेदवमाव
माविा॥दिनवतीयमुहूता॥मि॥ तैस्रानि
निर्मलमुविमको॥इहविवाह॥ दसदिवसे
नवहमुजमला॥ रम॥ जाहिजन्मकमप
हिरैयहिजानि॥ अमलसंधिउयापुनरहि
नमानि॥ नहनावधारिकोविमहोइ॥ दपु
दिवनताइमितकमजोइ॥ वकाजिगउ
महिपीवताइ॥ हुजतीनवीनमतुताकह (ए
इ॥इहहेतउअदयगत्रिमाहि॥हेतिज १

ममर्म द

सुनी या द्रशा दिवसमा हिहैमुहर्थीशा २३ ॥

हेउ सकत कला कुल माहि।

होसजसमाजो मा दस दिनतत लका

होश पीडा ब्यापितलक ममुमा

लजा खदिनसोच सापती तेज सहूर्ण

पालनमपुरसी दिनवियमारिय।

गएकही सन माषि।

ध०
२

गतजीवमैंजानियो॥पुन्यपाप्रवहनाग्र॥२७
दोउीस्त्रीसंगोत्रंकौ॥सुनग्राह्मनोमय
मोजनतेमसुनोवतौहैकोरइवेजोमपर२८
॥छन्दपद्धरी॥जलविपउविलकाति
मोकोइ॥हतजवौस्मगतमिदमथहोइ॥
जवबालकेमेतसन्यासजानि॥रनलान
मात्रहोमोक्षजानि॥दसम्रइगतिहूतवनी
तापस्यातसतौजोमतनहीति॥सवनीना
तिमैस्वेवीच॥भनहोइसुतकउधौकौ
उनकोषुरूसपादेसजात॥रकवरसवीपि
नहिसुनीता॥वेस्नतसहैतग्रालनानकौ
नानवहोइसुतासुनिसवीन॥३१॥जानि
स्तकहोइदेसात्रजात॥ग्रापनेजोगोत्र
केसुनोवात॥वहतीनरातिवाग्रहोतेन
जोहिसातिदिवसकोमोषकोन॥
ग्राममनक्रवोवातनको॥
लेतहिकाल॥जोहिसं

एम
१२

ग्राजलक्रीयाताइकीनहीहोइ॥
चकछतुपजंतनाहिकै
ग्रपहिमाहि॥

॥११८

जपहलीसौचजानि॥सुणिले
कोनिधान॥तुजवोष्पानरानीजुहोइ॥
नदिवसचीसलेकोकहतेहोइ॥
सणीकहतनाम॥लिषदइसी
नतनाम॥कीजवरमोडसेमनाणानि
निराति दिवसकोसोचजानि॥उणीजात
कहेगायोगवतीच॥श्वीगायागर्व
॥जितनाजुमालकोगर्वजानि॥

॥जिहिश्रावनाइ
गाजा॥षटूपंचमहीनागनेजा
॥नुपरांति
दसदिवसताहिमे

सोचजानि।। खुपरसति समय
होय सहसहि तिन्होंकजन्मसुकोइ।।
तोन्हमातदसहि बुसजानि।।४
[illegible] की
नि।।जिवकुत्ताबोसतकेजानकसतीय।।
मातसोक्सहि दिनसहोय।।
तानिहोय।।अथवाजुष्यसुवैलहतको
जानिपजोहसजोकजपाहितोप्रथम
घोसबहिनष्ठमाइ।।अववलनकेसातहि
देदैहोत।।नछतनकअथमहोदिनजदो
तोजिवमानस्मसतपीछैसकजोइ।।जदत
मफलतियकहोइ।।
मानवप्रथमदिवसहीमहलकोन।। २
कौजन्मस्थतितकम होइ।।
मचपूर्वदिनमहनहोइ।।तु
पीछैसजानिमनहेजवाजनमजा
तावीचसोचकीकजोहोइ।।दिनकों

महनहोय॥३३॥दोहा॥

३४॥दोहा॥ पीछूँभयाकानवेधजो
नातीनाकौफिरिजोनिदै
परदीनमनहुप्रवीन॥३५॥छंदचौपाई
बालकजन्मलियोजिनजोनानाको
दानआगमनकीना॥पीछैचूडाकर्मके
रागूनाकोदेखनावनदनाबुमुंडनफेरि
बालककोहोय॥जूडाकर्मकेहेमवको
इ॥आमिदाहहिजहिकै॥योमहानानीन
रातिकोसूतिकजानि॥३६॥जिहादिन
बालकमहिजाय॥चूडाकर्मकियोनहि
नाहि॥येकदिवसआगजनीजोमानी
कोसोचइतोहिहोय॥जाकोहोइनजाय
प्रवीन॥सयसोचकीकारियेहीत॥याउप
रांतिमानहतहोय॥इप्रानाकोहत
कजोइ॥गर्भमाहिबालकमहिजाय

सूछिमसताकड़ा ग्रैसा याकौ
नियोतिहिमानानिछकनाहि
ग्यापि संकलयाकौ कोमस्तकह्म
तनछिनहोइ ॥ ७ ॥ अस्टपदी ॥
कर्म धर्म जिको होइ आपी छिन हा समा ऊ जो
पहलीसस्पहोइ मतिमान ॥ येक
मोतत्रुजानाहोइसमामस्थानाइ ॥
तासाहपहलीमतिजा ॥ तोजानोदे
सुनसकेआनीनखिवसकौ
सू ॥ मसलाहै जोमतिजो हैनाम ॥
कामसलाकैधामनेरिचिता
ताकिलिसोसे समसिलेउसमनमाहि
तोसैसदलाहिविस ॥ मौन
कोहेमस ॥ कोई भूलसमस्तगोचोन
नसोमिलनपारसकोनतोन
लनचारीकोजोइ ॥ सोचसापती
होइ ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ मिलिवेते
तोचालनादूसतहोइ रहैनिरंतर

३ल्गोहि

०॥छन्दपद्धति॥मिर्ल
ककहेकोश।मलक्तीयकौंडुर्क

नहेयेदा।४९।६
हाश।

श।नहि

दामोमा कमालइंगको भलै हो ॥४२॥
सजनमो मेपसको उपमा ह्या
मोकह मधिठ मैत्रमा ह्या जोकततेहै
पिउपास मामीपुनि नमन मोघतको
तमेमा जोपुर सबोतेसंकोकहा ३
उत्रिम पलिमि निउ नामा चितलोते
मकैमवीन मइवते मंकको परतकै
नोजोदिमय महिम्मासकहो ह्या कि
समेगको कौमा उतिजानकोविनको
सउना ह्या मोटो सउरनिमेपडे आइ मथर
कपाइ सउदे मतोना॥ मोमहिमकारतो
नहोचीन मोहत जननसकके लागि
सइष्यमाको कोमा॥४३॥ दोहा॥
तकजानकसुदना॥ भगट मिलनतजि
नि मतकमनकतेकहुना मुकरा
माति॥४४॥ दोहा॥ मुलकाकेनहु
ना॥ नघुककैमुलना हि॥ मपरसतै
कलगो॥ मनमोमकैमाहि॥४५॥ छंद

छह्री॥परगोत्रमाहिजैहैमवीनान्हजू
त्रिउ०परामकोना॥मलपंचगाव्य
नैसहितमीना॥तुनिपवित्रहैरहितीति
विवाहकजूमपहोरा॥तिहिवीविन
सतकमकजोरा॥संकल्पपूर्वजोमये।
मा॥विहन्मन्नमोजनानो॥जानी
निमनुमहाना॥मव
मोराजिपके विधाना॥दिनयेकवी
इसमाहि॥तिहजनमरनसूतकसुन
इदसदिननमांमजूवब्याहकाज॥तिह
मरनसूतकमसाज॥जवंधनाहि
इहविचार॥नादिननमाहिनहिदोष
सारा॥मवमान्नमाइकीसुगतिबीन
मकचांहिमवीना॥ब्याहमहीन
कजूमोरहोइ॥कजूजनमरन
मजोइ॥तवतनकविमनहिमा
जवतनकदोमनहीहोमपूर्वक
समैरैनाइजदूरमपाहि॥मयनाम

सतकै असरन आसालिव पूछैसोम
सै आ। जिनै सुकामन हिर्मान देआ
नमै जुमै अन्म माहि निसहसमान
कहासु। कैजु अन्म माहि। सो मरन होइ
नहीं मोच मिट जनता कहो सु। धरमा
चनाहि। ताचौ होसु। किरिसौ रमोच आव
नकै सु। सो भ्रम मैं चैनो नहि जानि सह
तैन धर्म बताव खानि॥७०॥ मैहजात
कौ तु धीर जिन कमन कौन होसु। कहासु
भ्रत आन क जिहं जानत सब को
सुहा जानकहू नैहत ने सबको। कहीत
सु।॥ आदि नाहि न कहि तोस को
जर्ष का हिय ॥७१॥ सुन्ह बेसरी॥ तापि
पूछ्ह सुराज॥ वह ही कह मो कारियै काज॥
जिन न कहि कै कहो न बानि॥ कहि सेक
सुद्द है जानि॥७२॥ मति का महजु पात
नेइ अवनि नताइ मिलावै सेइ॥ ७३
न करियै असमनान॥ ओ टोमा चमन

कज्ञानीजनवपवित्रतापावतिहोइ॥होइविप्र
सोपुनइसोइ॥कवलनेगउकोदुअयना॥दु
गनुहत्रीदेइसुज्ञानीविस्पदानतिमनोहेता
इ॥सुउचोगनोकोलुचाइ॥आक्रमसेपोमेदु
अगाता॥त्यागतवरनसुधहेजाता॥कुसरागनि
मतवेदिकटिवारा॥हेतगउअपधरमसाद्दिवा
संग्राममरनहेको॥इ॥येकोनिपहिंसतक
होइ॥५०॥दोयप्रकारपूरसजोहोइ॥सूरज्ञमं
डलवेधतसोइ॥परिग्रहजोगहितिताहिम
नमुखमरतजुधकेमाहि॥जुक्तिमहानहुह
नरपाता॥रविमंडलकोविधजाता॥आरनक
रतदेषिसनामा॥जोहियमेहुजमेजनामय
मेकछुनजानौमेवाय्यानचानिनहेसुजेद
वा॥सोमंडलनैवेधिहेसोइ॥परब्रह्मनेप्रापति
होइ॥जहांजहांरनमेबहुवीरा॥भ्रनुनककैके
विस्योसरीरा॥सवसोजुद्धकारतमारिजाता॥त्र
अह्नयतोकननकोपाता॥काहिरताकाजात
हा॥कहतजोवैना॥५१॥छंद

सुक्लो॥ सकमाहिं घ्रिडैलै लेहैको ग्रानवर ए
अलक्षीलिाअहैरोग्रालर मरतजुडमौ चितन्चा
गानदेदक्रअनां मांचैतापि॥ रहदूहाषिनविप्र
मजोम॥ कांरिमरत जुद्ध चितानकोग॥ ५४॥ स्म
महोतजोविरमाज॥ सरवन्न फोजडेमइलाजि
नवहनैसर्नुसनमुस्पवीर॥ जोमरैपैडमनवारि
बीर॥ जैलिकदस्म जैबलकोइ॥ फलनाऽसमेघड
गिमाहिहेग्राय॥ जुजाकेप्राहिमैलेगातवानाम
स्लागितुदमालक्षेदमान॥ पुनिलोहलपटल
ठीलगातं॥ हैघिल्प॥ लिलललैमेपरांत॥ लिहदेवक
सकलहिंहैसरा॥ हि॥ बालहलमंताकिंमेचाह॥ ५७॥
लमाहिहैलहलस्टवी॥ बल्मैपडललेधरै
धीर॥ —मपहरलमहलुपुन्नीमुनागा॥ मरातलमे
सकरिसानुहगा॥ लाम्पोलेलाढाविविद्यावता
हि॥ चालिलघिलामुअमाहिलाग्र॥ बहल
लाहिलालौसमकोइ॥ बहल्लमरतपानकोत्रम
होय॥ संतालनअपकैघियैवार॥ विघ्रिजुल
हायहैमधीर॥ ५८॥ अदमस्तकाद्रिमनैबि

मलै॥७॥ जबचलनतन्हमिलभयांन लेहितिन
पैंडपैंडपरसुनौजानिं॥ करनजगप्रापतिहै
नक्यानिं॥ रहवकतलानिमुनिकौसुवेस॥
कविजगनलगतहितलियोलैखपर्योसौ
नहिगोत्रकौजातिको॥ कछुनाहिंबहीम
नमंधहो॥ ऐसेतैमनकछुजसहैजाइ
समसानन्हमिलैजाइता॥ ह्यविधिकद
हतिहकरैको॥ पुनिमागयामतैसुकहोइ
दथा॥ सुनकर्मकरनवारोन्हदेख्यो॥ तिनकों
नमछुहैस्वसुननेवा॥ जनकोयेलानिहै
जानसुया॥ रहस्यमतिमाहिंकहिंतुजनउछ
द॥ वहमतकेसदकोकछुबात॥ समसा
नन्हमिदुजसंगजात॥ तिनपानश्रिमबह
नैतीन॥ पर्यंतसुकनाहिंहैसवीनाहरा॥
पुनिकौविमसकनिइहैहौना॥ किरितीनरा
तिजोजायवीति॥ सोसतिस्युमुनिकेहा
थाकोहैननानदुजजहाजा॥ नृतभया
पामध्यतपानकीन॥ तवसुकहेइजानोम

बीनो ॥ इहु ॥ करि हिंसातक कहु ही मनाय
करते लोक जन नवा मिथ्यात ॥ तिनकौ नवि
महै तब तनै ना ॥ तब ताकु धर्म के कहे वैन
पावै सो मतनिमें हिंसा है ज्ञान हुं ज्ञे जैपर
गही मेह तजा ॥ जु मतनके कहु तैले बैको
धर्मो नये हिंसामें तेकुछ हे इ ॥ ८५ ॥ इति श्री
पापक्षोभमेमा थ्येयर्मवेन्द्र दया की
यसत्यूपसमा मा ॥ २ ॥ दोहा ॥ मतिमते
हुन्न तिमानतै ॥ मतिहिं कोधतैता नि ॥ जे
मम मतियहै जगत ॥ तिनको पापहि मानि ॥
करत मोवहन विषैको ॥ का
मरनपर पतिपाइजग ॥ ताकी गतिनहि
होइ ॥ २ ॥ छन्दवेसरी ॥ विष्ठामूत्रन्हधिर
ना ॥ पूरन मांखलकपाहिंचान ॥ सा
मवमेति हमाहि ॥ बडो हतनरसैथे
नाहि ॥ मानमधाती पुतलकहाइ ॥ ताकेहन
इतैजाय ॥ मगा निचिताकैनौ ताहि ॥
धदमवयामजु ताजियजाति ॥ मे

नकौतलवथानि।।निहरफो।सिसाकरिमरि
मसतरथातकौनिजकाग।।ऋसैमप्रतिलहै
अगमाहि।सपातेजेसकरलवहनाहि।।म
थाचाहि।।ऋमनिदेसोशकांसिहरोमारेल
हेग्रुतातत्य:ब्रब्लकरिनिजकाम्नवहै
वहैमुभतापाग।।ऋथकुतरलकोरीन सन्मै
नायोपाएहरकेनिजवैन्ना।।ऋअलान
जोतीयकोयानाकोपतिरतिश्चमनदैया।
वोरमालनहसाकौपाय।।ताकोलगतन सनौ
है।।ऋापा।यातेजितलहितगलिदेजा।।यामैक
संदेह।।७।।तिनसनालकोतिसाक
नथ।।पतिकेपासनाहिजैहजाय।।मोर्यंवह
मजाग।।पिछैवाकजन्मवहथारि।।
धवाहोइहैपतिहीन।।ऋतातीयनराहि
हकौन।।घोठातीयानहिजोहोगमायदोम
हजानकोग।।जोवनवर्तमानहैजोग्रप
त कौचितचीहा।।लोवहगुरुसजन
लोमाता।।तीयियाजहनानहैजवथात:ज

ञ्जलनको विसवा होय। जातें सनुसि किजी
योको मरे। ठेरा। साधि जुल्लन्म लदाद
पूरवे सुख्याति चीन। ऐसे पति को जो तिया
मानकजहि कीन।१०। होय वृषकरी सिते
जव ताको हति भाय। जन्मस्रकर को मि
ले जाको बोबोवाय।११। चौपई। संगकवारी
सौ करि कोइ। ऐको पूत्या हता हि लो होइ। मत्या
पिछु तिनको उतपान। दीजै नहीं पिंडको दा
न। जालको क्रियान करनुसार। कल्पांतर व
हनरकमझार।१२। छन्दपद्धरी। करुउजो
पोन है वीज कोइ। अरु जानि खेत में पडतो
को। उतपन्न नये बह वीज ताहि। तिय जो
कत्ताहि का खेत माहि। बह धनी वाहको नये
वैस कछु वीजधनी चाहै न लेस।१३। पर
हमसुउतपन वसहोइ। ताषुत्र कउतकारी
कहोय। येककुंड ल्याइ गोलक बताइ। पति
जीवंत जारको गर्भ नाइ। उतपन्न भवे जो
नंदगोह। जिहि कहत कुंड नाहि न संदेह। पति

नयाआरकोरहैगर्भगोलकसकनामसुत
कहैसर्वा॥११॥जोनिजविवाहताहोइतीयपात्र
तपनताहिमैसकतमहीया॥सककहूवातम
मनाइतोहि॥औरीनिहिपुत्रतिहिनामहोइ
निजतियामानहैवीजन्मानो॥क्षेत्रजहिता
हिकौनामजानि॥जोनिपोगोद्लसदत्तकहत
हइतंद्पुत्रकामतिमहत्वहिकैमसनपितुमा
नहीना॥ताकोसुरतकहियेप्रवीना॥१३॥सक
परवीतिहोतहै॥सकपरवेताजानि॥याचक
हतासवैयो॥जातनरकमनमानि॥१४॥हर
तिहोत्सवंजोगजानि॥वडन्यातजतालघु
केपानि॥वाकौपरवीतीकहैसोइ॥परवेता
भातावडोहै॥परवीतीरुतवहकछूक
[illegible]॥परवेताताकोवहवता॥भ्राताकहोइ
कन्यामहाना॥सोकरतरुधरुतवहिमजा
न॥पुनिहवनकरनहारोकहापि॥जंनुयन
रुतवहकरैचाइ॥१६॥ऐसैविवाहकारिम
हितप्रीति॥परवीतीवाकीयहैरीति॥साउजा

सोमैनमहस्मासजोग॥ निधकौ सोगकवलमहोर
रहवचनयहतुरगनाहि॥ मानि॥ कविजगनचित
मैहैउलानि॥ जोपहगोनकौतियाहे॥ नागुवि
नाहकरितेनकौ॥ मनवाहुयेककौहोपत्नी
या॥ नागुविब्राहकहिसेताहियु॥ याकोमुत्यागपि
रकौकै॥ प्रतिकैकोछिवेनहोयसबयारके
मानमैतजोप्रगटहोय॥ प्रमिवानेनारावि
निन्हैओ॥ जौकरतेप्रोजोरोषनाहि॥ येस
मिलिकेउजाविचितमाइ॥ २०॥ एकमानप्रो
गलिङनिधजानि॥ परनाहिताहिकेग्रमानि
गगमितिहोगसजोगमाहि॥ नकौनरहेसकेउ
नमानना॥ उनिआगहेअनतपरानकोसुमा
कोनिसकेहालहे॥ ॥ नभ्याईमानकोकान
कोइ॥ कन्याबिमपातिमगहेग॥ नमयोक्वा
हप्रतिहेमकौका॥ जवनहेगाइवहेमात
उजराजकाजवहकैसोहि॥ याकौनियानगु
नकहेमोहि॥ किहितनवाहिकन्याकराहिप
निवहनआहिजिसजामु॥ किाकिकेविप्रञ

खारवेदोहैसुद्धकन्यकाग्रहिभेद॥ आहीजहोइवू
वता॥ मैथुनतुभापतीप्रथमपाहि॥ प्रीतिगइ
पतिकौनआनि॥ मैस्यासमानवहतियामान॥ र
वरकोकामितकुल॥ अससुभा॥ जाकरिकदा त्रि
उमितनकाम॥ बामेनमंत्रकोकछूहेत
हतकमासचेन॥ रम॥ वरकुवजावावनखंडहोइ॥
द्वादशहीसद्धकारवैनजोमुनाजन्मआंखअलव
धिरमानि॥ अलहोइमूकमनलेउमानि॥ जनेउ
वजिहिउसहोइ॥ कहिकानिस्तनहिदोसकोइ॥ गा
कअंतोइ॥ २७॥ वैपरी॥ अथवा न्यहिहे
योपीव॥ जकहेइवानिसमौजीव॥ कीनो
सीहोइ॥ अथवानीनवकहतसवकोइ॥ रोगन
रितनहेगयोछीना॥ अथवानडेपापतीनकोत
पतिपतिमेहोइ॥ पतिउजोकरदोसन
२८॥ पतिकेजीवतजोतीया॥ व्रतउपासकरिचा
पतिकोउमरेछिनहो॥ आपनरकमेजाइ॥ र
वनहि॥ करतवातउचाया॥ व्रतफल
कौंएचिमन्नहे॥ नारीनरकमेजात॥ ३०॥ पद्धरी॥

धर्म० पतिमरचौपाछेजो तियाकोइ ब्रतव
२१ नहोइ हैमरनसैमैजो स्वर्गजाय ॥ जिमिव
हैमिलतभ्राइ ॥ स्रुतिकोटतीनसाठासहीर ॥
बालविचिङ्गतनैंसरीर ॥ सोतीतेवरसपायंतजोइ
त्रिहिस्वर्गवासप्रापतिसुहोइ ॥ पतिसंगदग्धजो
तियाहोइ ॥ ताहेतमानिजानौसहोइ ॥ ३१ ॥ जिम
उरसव्यालगनाहीकजानि ॥ विलतैनिकासी
करतपान ॥ असेउधारभरतारकीन ॥ पतिसु
तसुतियेप्रवीन ॥ वहस्वर्गवासकारहैहमेस ॥ आ
नंदप्रापतितिनहियेस ॥ ३२ ॥ नारिवजेवावत्रुअंज
जानि ॥ असमहकैउसरगाहिमानि ॥ ३३ ॥ अतिअ
सीनतीजमाहि ॥ जेआधीविभागीकसूनाइ ॥
विधवाजहोइकन्यानिदोस ॥ वाजितसोहोइभर
तारजोस ॥ जाकोजवासपितुगेहमानि ॥ कन्यासुअ
क्रमनलजमानि ॥ ३४ ॥ इतिश्रीपाराशरधर्मसा
स्त्रेधर्मशास्त्रेहृदयत्रतीयमघ्रसमाप्तः ३ ॥
॥ दोहा ॥ स्नानजंवुदानकोकहो उस्मोजानउत्रराज
किरियाकोहैसुकता ॥ कश्यपकहतसुनमाज ॥ १ ॥

॥छन्द पद्धरी॥ कान स्नान विप्र प्रति करै न्ना
त हो इ वेद मात अनु जोय॥ रहकौ रिति जो नि प्र को इ।
तत काल विप्र वह पुष्ट होइ॥ गो श्रंग धोय जल तत्त लै म
हा न्य॥ पातै जु सिद्ध को जे सनात॥ महा नदी सम्मागम
ला न कीन॥ ग पथ्या समुन्दु स्नान प्रवीन॥ न हकौ रे
विप्र चित की ये चाय॥ उज्जल जु दत्त विप्र न पाय॥
तति पुन वेद विद्या प्रकार॥ उसि पायो स्नान उज्जलति
हि वार॥ वह है मत उदक न्य सनान कीन॥ स्नत की ये प
न सुद्ध है प्रवीन॥ सब्दत्ती क विप्र को क जु स्नान॥ जे रु
न न्याय वा को अ यान॥ कर है प्र मान उज्जल सरि
वर रूप ा द्दष्टि देव जल स्त्री॥ नव वह पवित्र तत काल
हो इ॥ पाप सैन संक मानौ न कोइ॥ क जु स्नान न्याय ध्रु।
हि उ पो जा नि॥ तन को यो विदोर न न ब्रमा नि व
स्नल पच्चा लिकै स्नुद्ध हो य॥ उपकूल न न्मा नि क
इ॥ ३॥ क जु स्नान विप्र कौ उ सो काइ॥ पोद्दु।
हु कर कै सक भाय॥ प्रति मस्तन दत्त जव उ दे हो।
॥ स्नान सता इ के कोरै सो इ॥ क वि जनन कहन्त।
गवि च जा नि॥ वा को प वित्र ता सो सुभा नि॥ उज्जलो

१० रनतमेन हिहोहि ॥ उसिगमोस्वान जिहिरहतसोइ पारि
२ जमहा द्वकमकीकेस्मरि ॥ उजकौल्लानपुनिकोउ
स्ता ॥ निवहोइ सज्जवह सिद्धजान ॥ कविकहत चितमेले
आमानि ॥ ४ ॥ कंउस्नमुपुचिकरिकै कऊवामुरनीनैहे
इ ॥ बाद्रसके हाथपुं ॥ सतकहुवे जो कोपि ॥ प
॥ भगति होउ जो विमकाइ ॥ सोउज फेरनेतक हैजा
इ ॥ विमतैवा करि स्मानमजानि ॥ ताकीकजाकनो इहवा
नाम्नाही विप्रको विप्रमहान ॥ कोदोहसोप्रनुकजान या
नोवरमति हे ताके माहि ॥ मंत्रता हिकौ आवत नाहि ॥ वा
को सपरम कोसकजान ॥ नेकरिचलै मूमि समसान ॥ स्म
॥ तिदाहता हिकौ कीन ॥ वाकौ पिंडदान पिरदीन ॥ विप्रव
प्रकै वचन महान ॥ भजापति सुतकौ उजान ॥ करिकै
दाह स्मास्य पुनिलेउ ॥ उष्य समा कारिबो वैत जाति
उपारकी स्मानि सोता हि ॥ पुनि वह दाधकौ चित चाह
मथक मथकउ ओमंत्रमवीन ॥ पितिताकौ उचारन की
न ॥ भगति होय कविकौ जानि ॥ जाउजकौ मतहोइ
महान ॥ देवलोगपति उजपादेस ॥ देहसामजो कियो क्वे ए
स ॥ वर्तमान आगि जिहिंगोह ॥ हे मित स्मम जोमुनिलेह २

पांडे दरह करि कि उाव पावै ॥ भाति होत्र को मति
न ॥ भवन करै जाको चित चाउ ॥ पाम चर्म स्पर्श देउ
नेक रिउ भस कनै कथ काउ ॥ ताको कहन परस
आकार ॥ हि त्रिन पल्लव सती न आस साधि ॥ जानौ वह
उाड को गांठि ॥ नेचा लि सथा पेउन संग ॥
है कउन के संग ॥ इक सथ करै भजन है साथ ॥ है
करै आपुन हाथ ॥ सो वद्दन यत्न माहि माथि
टमै मिलन करि राखि ॥ त्यम गाकनै आटघा रिलै जाइं
न्ही निकट पंच सुनि लेउ ॥ तताइ सथ रिउ कत जी ।
कै ॥ जंघा जानु वी सथित गोको ॥ चरन आपुरी धरि ।
॥ पत्र श्रोत थित करि तिहि पास ॥ लिवा सिहत ।
टिक आर गी रासि ॥ कादह नै मे उजाल माथि ॥ त्त्वी ।
श्रवा बामकरि माहि ॥ भोर कडाकनन को गाहि
नरव्स करि येतिहि वार ॥ मूल नथरि येपी ठम नार
हेस थत्न पाषाणं धरैं आनं तुलनि लिन मुष मा मध
रैंस्यु ॥ पान मो ह्व गी कान धराय ॥ भाजि स्या नेत्र न कै
हि ॥ छत पात र आजि स्या नाम ॥ कनै नेत्र मुव ना
गम ॥ कंचन कनक सभ न मै डापि ॥ भसे वत्ताक

धर्म०
२३

स्यो विचार॥ जामानि है जसामा सबनेइ सरवव॥
तमै तिथि करिदेइ॥ इहमान सबलोक सिधारी॥ छक
आज्ञत हवन मैं डारि॥ १॥ उक्त ला तनिज फलयांके
इ वा समय न हि है जे हो इ॥ जानि स धर्म तिनिज
तिय ताहि याको इच्छ करावेत चाह॥ आज्ञा न देहे
सास्त्र विचार॥ जैसे देहन कर्म विस्तार होइ विवेकी
नितमुयदाइ॥ उनको इ [illegible] नाहि॥ ०॥ आप
विधि जो करिहे कोइ॥ सुसलोक को पापति होइ॥ य
हानि हवै करि लिया सो जानि॥ जो कछ आसै को वेवा
न पुण्य ति होइ परम गति ताहि॥ यामे कछू संक है ना
हि॥ आपनी बुधि से वो धित होइ॥ औरस कारको
जो कोइ॥ ता उ अछी न होइ ति हवाहि॥ निस्वे पडि
है नारक मम्मा॥ ६॥ इति श्री पारसुत धर्म सा त्रोध
सिंधु न्द्रोदय छंदबद्ध नाम षष्ठ धर्मयुक्त समाप्त॥
४॥ दोहा॥ या उपरांति मुकहत है हलाको उछाह॥
लोकन के कल्यान हित॥ प्रथम अर्थ सब सार॥ १
॥ छन्दबैवरी॥ रतिविचुचवा सारसहंस॥ चकवा
कवी कुरक [illegible] मेष मयूर जीव आजाति इनके

घातककहैवघात॥ग्राहेस्त्रीव्रततैमुक्तहोइ॥वग
लामुकटीडैठजोइ॥माडीनामफकुतर
मारतजेकरदोर॥इहिविधिमुनिलिजेसवकोइ॥
भोड्यव्रततैमुक्तहोइ॥३॥कागकमेडीसारसभासती
तरमैनावतकविलास॥इनकोहतनहारेजगजाहि
हैसंधाजिनमैचितचाहि॥भाएणयामकौजलवैठिया
तैमुक्तहोइनिजपेठि॥३॥मिकारसिखीगीधऔरएना
ह॥भासउलूकहतैचितचाह॥इनकौमारनहारेहोइ
कद्विवसमैकरिहैसोहि॥आपकासिच्यनकैसठा
ग॥कैडकालपोनकोहर॥नववहसकधहोइसकालि
॥इहिविधिकहीसुनीजनबीर॥४॥बागलचट
ककोकिलाजानि॥वंजरीटलावामनमानि॥मारं
डवचकोरचीतचीभ॥कूरपिंगलाघातकहीनमो
रछजपाहिजिननाम॥इनकौहतनकरौविनका
म॥मुनिपूजनजोकरिहैकोइ॥तवहीमुक्तताप्राप
तिहोइ॥५॥मैसंडसेननोसउरन्मान॥मारएवतले
कप्पजलजानि॥सवपाहिनकौहताहोइ॥महारा
त्रिव्रतकरिहैसोहि॥मोंरानेजिननाथ्योमारि॥

१० वदविनताव को कियो विचारि ॥ अजगिर मर्पडं
डेडे भाति ॥ इन को हतन हार अनमान ॥ वि
ज्यक मारका राइ ॥ नोह दंड की दछिना ह्याइ
इन के समक गोधसुन लेवे ॥ ज्ञानम मछ मकड॰
के डीव ॥ इन वौ मारन हार सुचीन ॥ कलह
भदि जैकीन ॥ अहो रात्रि कौ व्रत कराय तव ह॰
मकता मिलि है आइ ॥ ७ ॥ एक जंबू कंसरि सार
नाम ॥ तरकै सर्थ करि सिंहव वाति ॥ इन घातिन
की सानि है ऊ ॥ तिल पलन को दान करे ऊ ॥ तीन
दिवस तक वायु अहार ॥ तव वह सकटहो
श्रीगि ॥ ८ ॥ गज अभिगवय ॥ रंगव वाति
रगा जैसा मानि ॥ और उष्ट जे मारत को गु
निपरियंत सुजोग ॥ इतकी रेतरु ऊसुज साज
जनत्रा तिकारे ऊज राज ॥ असी रीति क
तव वह सकपने को पाइ ॥ ९ ॥ गाव
विष्यात ॥ कोरे पान विन इन को घात ॥ अका॰
के ट कल भोजन कीन ॥ तव वह सुद्ध
ना ॥ १० ॥ या प्रकार चौपाया चार ॥ सव वनचा

ननकरा॥ अहोरात्रि व्रत करि है कोइ
नारी॥ अग्नि मंत्र ते सिद्धि होइ॥११॥ सिलिकात
इकादश॥ त्रि इन घात करौ चित चाइ॥ दो
पति व्रत करे॥ पारण दान उजदेहि॥१२॥ त्रै
स्य होइ स्वाद त्रिक हंता॥ निरदोस को घात करत
है अति कष्ट व्रत करया॥ वो मगउ को दि
द्वाय॥ जब वह सुकृत पने को पाइ॥ याते कहि
माइ॥१३॥ वैस्य हइ ता को उनमान॥
आसत कव चालि॥ और
जो विकर्म हू मैं रत होइ॥ इन को विधि
विवेक॥ चंद्रायन व्रत करि है येक॥ तीस
वि पुनदान॥ तब ही सुध है जानत जान॥१४॥
त्रि वैस्य सूद्र करि जो हइ॥ हत पुरुस कारि कै द
बुद्धि चडाल प्रापती कीना॥ आध क्रिछ व्र
त॥१५॥ बौ रसु पाक औ सवेडा
गौ है हत जावो सुखालि॥ अहोराति
प्राणाइस का धरे जलास॥ ताकी रि
इहि वात जानत सब कोइ॥१६॥

धर्म० रूकपाकमुनदुवजीर। ताकोहोइचिंडालनसरी
२५ र। विप्रसनानसनहीकरकीन। तोवाकुजलकीसुन्
प्रवीन। कुजसुनोमनकोसुचोइ। वेदमातकोजो
नकराइ। जबपवित्रताकोवहपाइ। असैमा
रिगदियोबताइ। २७। ज्योंचंडालनसंगजोमोइ
नीनगतिपरयंतसुकोइ। करिउपवाससुदता
पाइ। जोचिंडालनसंगरोहिचेतनाइ। वेदमातकोसु
मरनकीन। तवपवित्रताचितमेचीन। २८। दो
हा। जगदेषतचिंडालनकोजोनरकुसतकोइ
कासिवसुतकेदरसतेतवैसुद्धताहोइ। २९। छ
न्दपद्धरी। चिंडालनपरसज्योकहकोइ। ताकी
जोसुद्धताकहूंतोइ। वस्त्रनसहितअसनानकी
न। जवहीपवित्रहैनरप्रवीन। चिंडालपात्रको
परसजानि। जोहोइकूपमैजलतवषानि। वाकूप
नीरकोपानकीन। सोमत्रसिस्पाजवकरतली
ना। आहारकेतेववहीकोइ। जवषेकपछिमेसु
द्धहोइ। ३०। चिंडालपात्रमेनीरहोइ। अज्ञानपा
नकारतेतकोइ। ततकालनामिउतनठोसदेइन

प्रजापतिव्रतहूकरैंग्राह्मकौ॥
गृत्तवकहेनायतवसुद्रहोइ॥५॥
तपहोनाहिलगियोनीरवइउदरमाहि
पतिव्रतकरैकोइसुद्धीननाहिकोनहो
कछसांततपनव्रतहूतकीनतवहोइसु
प्रवीन॥२१॥दोहा॥विप्रसांतपनव्रतकरै
प्रजापतिजानि॥वैस्यप्रजापतिआचरैयावि
सुद्धिजान॥२२॥छन्दपद्धरी॥चौपाविं
सुद्धकीन॥अवकहुऔरसुनयेप्रवीन॥
दिवसभोजइकवारकीन॥ उनिहींमघडी
सौविनकियेजाचनाआंनजोइएक
भक्तिकायेसुजोइ॥दिनयेकउ ९
रकीन॥इहपादकछ्रव्रतकहिप्रवीन॥२३॥विन
नवैविप्रचिंडालपान॥भद्दिनसकरैत्रिय
हिस्पान॥जोमत्रमाहिदेजवनिजोइ॥आ
रैतवसुद्धहोइ॥२४॥इमछोमततलकइहयेक
गामभक्तिनसुकोयथाकिडनोसतवसुद्ध
ताकोव्रतजियराखिचिंत

धर्म० लविनजानौजुगेरामितजुआगायोजानलेउ
२८ लविप्रवारकोहिजल उजाजअमत्कोमै
रि रिषमुवनकहौमोधर्मजाति वहकोर्लेम
नलेउमानजेधर्मसास्त्रकाप्रवीन पापेसप्रु
सबकोसद्कौन २५ दीनतीनतलकेदधिते
वताइजवअनताहिकौमतथाइ घ्टतमहित
माइवहदीवसतीन दीनतीनगउकोउधले
न आलपंचगव्यकोकरैपान पुनिकरैमोल्म
नीतिधान गोमत्रतिभोजवअन्नहोइ रमिक
रैमनजवसुद्होइ २६ ॥ छंदचैपई ॥ मावत्र
इस्नानजोपैहोइ ताकोमदिकरैमतिकोइ गो
रसउ दौहोइसजान ताकोक्वुनकारियेपान
तुदहीकोपानप्रवीन कानताहिमुनोपलती
न मेकपलकच्टकोसातिलेउ अव
तौनाहिमदेउ सुदकनानागिकारकौको
लोहपात्रवाकोसोहोइ तामैपानकीजैयेवा
रहविचारिसुनौमननाहि वलनमा
वाह हैमवीत्रलेसुअहियास सुतिकाप

रिपानविछूसागकोऊमतिमाना॥२५॥न्तराक
गुडलकपास॥तिलअंनघृतसहितऊना
रनकोंकाढिलेऊतुनिधीरा॥घरकेंअगनि
गावऊवीरा॥२६॥अनस्तजनलकालगुजो
विपुलभोजककरावैसोज्ञानीस्वर्गदानकोरि
कोदेहिदछिनासहितविवेक॥सोइसुवकावि
यकहंत॥जानतहैजेवुधिमहंत॥ओरतिति
याकुलकवखकोसोहोइ॥ओर
लनीजातिवखानि॥आरहरनतीनकेपर
विनहीपानतेजोतियहोइ॥पीछजान
वेतजोकोयाप्रहलोविधसकरियेजाइ
हनकीयेताहि॥नहनितरवसिगो
वाग्रहसोनिकप्रीततकाल॥नहपा
नकोकरियेलाग॥होइभतकाढेवडभाग
कोसागकलेनहिकोन॥गोधरसंयरछा
॥जोकछुचितरहेसंदेह॥नवेतरफार
करिलेह॥२७॥इतिपाराशुरेधर्मशास्त्रे
7 द्वोदसमोसाछन्दवन्दपञ्चममू

अनमासा ५ ॥दोहा॥ ब्राह्मणकेव्रत
षष्ठीगइहोइ॥ विप्रासुत्रसुकगहियोकिहिवि
सुधिहोइ॥ २ ॥चौपई॥ तववाकोप्राय
सिकिनि॥ पापउतरनकीचीनविधि॥ गउ
गोवादमिच्छि॥ व्रतघनसोदिनतीन
नपानदीजेकरवाइ॥ नहकमोव्रतवसुछक
इ॥ २॥ दसचौमासापंचववआनि॥ सुवरनदान
अनमानि॥ तववहसुद्धहोइ सुनिलेहु॥ पा
तुनाडुसंचोइ॥ वेसमाउकोदानकराइ॥ व्रत
उपवाससुस्तापाहिं॥ सुद्धव्रततेंसुद्धनहोइ
विधिकोजानैसवकोइ॥ गउव्रयनको
मासन देसैकालिजैनेजुसुत
होइ कहिहैदान॥ विप्रनोजाकराइसहान
वनेपोवालेपोनकोइ॥ सद्भदानतेसुद्धि
इ॥ गउव्रयनकोदानकरत॥ देखैका
जनंत॥ इहिदानतेसुद्धिहोइ॥ इहिविधिसे
ममावततोहि॥ विप्रनकोकरिनामकोइम
नगमबिनहितनैलेइ॥

ऐसैविधिवाक्यआरनकी
रियेउजअपामसन
परिघरियेताकौअगतोहमहि
फलकीमापतीलनांमहं४॥दो॥मा
तिउधितैअरुउ
विधिसोमरनहैताकौसुभ
पविपुजायनिर्विद्नकरिसो
रालअवरिहैसोउपनामरतजकीन
१
होइअनुमहकरतावरता
कीमापतिजानिआसिरवादजन
मानिजवलकेउपरिलगलोइ
उमहकरतावहसोघअसैरहअं
वालतासोहोइअनपथावालमाप
होसमापतीताकोहोइ
खेहलोभकोकालताकयोच
होइसमाजकरैग्पानविनरूपासुको
समापतीताकोहोइ

धर्म०
२८

माहि नेमरव्रतकहनरताहि करतविहे
व्रतनेम होइ धर्मकोयामेछेम धर्मवि
करताचारौ नि[illegible] हैताकहैजाइ ७ जो
इपहसनेमकेलाग विघनकेअपमान
गिनाकौ विरधक है उपवास पनिउत्क
हि होयप्रकास ८ जोजो नेमकरै उजराउ
सोसो नेम गहै सुष साउ पुन्यगाव्रतन
नहै सो इ नहिकारियै उजहत्या होइ ९ प्र
नतप्रवासमोरनामनातनीरथ
नतसबजान विघनसफलनकह्योजोहो
इ नातरसफलहोतनहिकोइ १० ॥ व
व्रतमैं तपमैं जगमैं कछुन्यूनताजोइ वि
रूपा करि है जैंवै तनसंपूरन होइ ११ ॥ व
हीछन्द ॥ [illegible] राजतीर्थ जंगमानि नाग
सर्वकामनादैनहार जेव्रत न लपजानते
सुजोइ नामतिनहीयतवमुझहोइ १
जव्रतन ज्वारनक [illegible] से मुख्यव्र
तहमेस सो सर्वदेवमइ विप्रजोनि लि

सुमिष्ठानमानि॥२४॥पनिअनत
वनीहोइ॥जामध्यकोटमाँथीमुजो
सानिकसिच्यायोउदीदापि
विधिकरैइठाउजन्नैतैउमयोदेता
।–गसञ्अननस्मलपासकराश्व
होत्रवाधूपवेसा॥ताकीजोनसजोनुसुदे
स्नोजनमहान्॥२मकौरी
मुजान्यारथ्य॥जापत्रमाम
उविसर्जनकाभ्रिवीना॥भोजनउ
यापानउमध्य॥जोकरैंनोउपतामेमलि
इहमतमहानमुनिकोवमानि
४कोवाहिजा॥नि॥२५॥छन्दवेसरी॥गपा
पंचमोंनसैनेइष्टयवीत
कादेभोजनकीन्याथाकोकारनमुनौभवी
नारद्यापहरपावडीवाननतमाहिभोजन
हूकरनूनाथ॥वैटिठोनगोउप
नकरियेनाइसधी॥भोजनंनस्वानन
उत्नातनाकोस्यामकाउननकात्यार१

सिद्धप्रकानसहोय॥ताकीकछूमुक्ततातोय
मुक्तपोकछेसुप्रीति॥अन्नमुक्तावाईरीति॥
सपरस॥अन्नकोबांधिडारत॥
रतनकात्रो॥अबवहअन्नमुक्कोमिहेय॥उन
नगिनती॥औसेजोय॥ता॥अन्नमासेकोटमोय
पसेआंडनातीसहेय॥वासेउगनोहेय॥उन्न
न॥उगनोकाढिदिकुकारिमंन॥सतप्रेकनक
रिकहीवखानि॥यातैमुक्तजेकुमनमानिकाग
स्वानवासपेतुगाय॥मूठोदेगाइलो॥गायमुन्य
अंन्नकोकारियेत्याग॥अधीनहोयतो॥आधि
कमुनाम॥व्यारिसेरवा॥औसेसोतेसेर॥रतन
सागकैतिहिवेर॥अपमारासो॥अनमुहोय
ताकौदोषलगैनहिकोय॥अन्निकोसंपाक
मुक्तीनसुवराजनकोप्रोढिराकीन
चारकैउजराजनतधि
जा २९॥अवयाकौजअनंतरकौजो
कृताजैसैहोय॥पारामुजोकहीवखानि
मेताकुकछूममानि॥पातरसर्वकाटकौ

कांसीपात्रनसमुद्धौ

शातासौमुद्धजतहुंडाश। लोहपात्रअगनिमे
नाइ।सीतलजलसलेककराश।हाथीदंतसंघ
अदहेम।मणिअरुसंषरतनकौनेमाटनकौ
धोरैनीरसुधोशातवहोमुद्धताताछिनहोश॥२१॥
शशिपाषानलेक्रमुधडानि।हहोमुद्धताक
होवथानि।मृत्तिकानाजनअगनितजराञ्चादि
येनवारीन्हाभिसुनाश।वेतवकलअसवस्त्ताचौ
गटनकपालडसालाधीरानैनचरनेकौकज्ञ
आश।धौयैनीरसुधकैजाश॥२२॥दईगीअवाव
नरपीता।सुनियेरत्नवासकीरीति।सहजनामत
गावेसोशुजलप्रोक्षणकीतैसुद्धिहोश॥२४॥वांस
तपारीसरग्अरुघटजा।वर्मवस्तुफलअनके
काजा।काठओरहत्पादिकवात।तरतनीरतै
सुद्धहोजात।।तीनवेरतोकौसमना।चोथाकरै
आचमनप्रानी।पाचौजेइसंगकौनीरापोच
णकौसुद्धहैवीगारपा।मंजारीक्रमकौटपतंग
गौंधीमीडकपरसतअंग।जोगिवस्तुजयेप

साइ तो भइन ही उचीष्टवताइ यो है मुनिको
वाक्य महान जाको मानत सकल जिहान २६
नाम रुपान उभय फल होइ यो मेलनिष्ट तातेल
मुहोइ तेपन अमम दुपरके कराइ लमलअ
मत को जानल जानि ये उचिष्ट नहीं जगड
नि भसै मुनि ने करिनै वखानि २७ वह तो नी
लदी नल जानि इन मे जुष्ट कहन नहीं माहि
गाउन माहि देख्यो उष्ट माहि तिय जो अगुली
तैन चाखि पान उष्ट उठो नहि होइ धर्मव
चन इह जानो सोइ २८ छिकत नाक मीतक
तीके काटन ठिंस्तम हे हि मिथ्या वाचय
कहे जो कोइ कजानी च सना सम होइ रहनो
कातिपरा सिंह पाति तव पवित्रता निहचै जा
नि २९ भाजनि वेउजल लो मस घी सुरजल
पोनसर्व येवी भाउजा केव हनामुवनमना
वहा विराजत है सुदमा तो पिमला दिमनास
वताइ गंगा जमा दिन नदी चित्ता इविमका
नइहि नाके पासा मुनि को वचन कहावे प

सो आपतिकालमैंद्विजरजो स्वाचारनहीं
चितसोजा आपतिकालनिकृतिहिहोइ छित
विचषिरताजवहोइ ताकूकछुसवैयेहेता प्र
मआचयेगहिलेता॥२०॥इतिश्रीपारसुधे
र्मसालेधर्मचंद्रोदयनामाछन्दवन्धसरुप्पम
रूपसमाप्ता ६॥ वेसरीछन्द॥ पकारि गउनेवे
ल्तकोश्रीविनाकामनाडिविनहोश्रावनिश्र
सोपातकविनकामकैसेपापउतारिहैराम वे
दश्रोरवेदांतवषानिताताकेवकाहोसमहान
आसाजोवविप्रउदारा॥धर्मसालपुनीआप
रापुकामहूतेन्तरहाश्र आरजतेन्द्रीजगत
कहाश्रीताकौपुनीसकलपुमिसेदाजनकोप
पकरनिर्वेदाअसैजलरूपवीषितिजोश्राप्र
पोनतेवैसुछिहोश्रयाप्रकारतेसमानमहानधोर
पातकननासितजानिनहीपापकर्ताकोहोइ
रसमाकोलगैनसोश्रा१॥दोहा॥सुरजपौनस
ननसिजाततातसेहीवहआयम
रतद्वैजाताश्र॥ अथनाच्यारितीनजो

ताम० ३१ श्वनज्ञा कहै वेदको सोम आती हो अकृल्लीडस
ऐसमरथ्य हो इसवनको साजजामेहो इइ
साकुज रऐ ताको कहै समा सुवसास ३ के
वलवेदपारंगत होइ आसा विप्रडस्जहडोइ
पाचम ध्यतामे थिति होइ ताकौ समा कहै सव
कोइ ४ गायत्री जमैतस्तु पगाडा सपकीवे
वारे डुजराज इस्तदेव थिति जिहि हो इ वी स
येकेडजआसलाजोइ ताके विसै होइ डुजराजे
ताको समा कहै के विराडा प हो इसु निरुत्सा
तपाति डुज है तिनके मध्य नवा ति तिनमे
जमकर वन हार वेदमाम तैं आरमन ट
से विप्र समामे होइ वाके समा कहै सव को
पहली कहै पंडुजराजे तिनमे होइसु
साजा आसा विप्रतह तिथ होइ ताको
कहै सवको इ ७ पाउन रीति होइ डुजराजे
केवल नामस्यारिका साजु वामे समा ८
नाहि वैसा विप्र नहो ताना हि वासो ९
हेथी ताना मे समा पर्यो है नाहि विराट सा

स्नानादिक धर्म प्रमान।। जाकौं कहिहैं या हि विधान
जाकौं पावत नातहैं नाहिं। सदूत्तम अलगुन वा
मस होइ।। ९।। जैसैं कौ गमह जानत।। जैसे उत्तम
नाव कुरंग। तसैं विनावेद दुज रजो। येतिय नाम
धारिको साज। विन धर्म कौ मुनये ढंग। नाना वि
धि को होइ सुरंग। तासौ चित्र चितरे को न। जैसे
ब्रह्म पनै कौ चीनौं। संस्कारादि विधि पूर्वक होइ। ता
सैं कहि सममनउ तोइ।। १०।। जैसें पुरस नपुंसक
होइ। तिया माँझ वहा निष्फल जोइ। वा नगउ सु
खीन के माहिं बैठे कबहू फल दायक नाहिं। पा
न विना दुज दीनैं दान। ताकौं निष्फल कहत पु
रान। विना वेद कौं उच्चारन होइ। ताकौं निर
फल कहि सब कोइ।। ११।। दोहा।। सांम स्थान
विन सुमये जल विन कूप स जोइ। वेद विना दुज
रजो तिकै नाव धारिको होइ।। १२।। छन्द वैसरी।।
मे जो ग्यान हि समस्तानें भूमि। दिदीप्यमानस
ती सुभूमि। वह सर्व नाहिं जा मैं कहइ। दुज राज
धर्म सज्जन लेता हि।। दुज धर्म रहित सब नाहिं होइ

ग्र्मे
९२

सोनर्कजातसंकानको ॥ १३ ॥ सम
अतभदमानि नहब्बानिसर्व
निमिखानवानजोविदुहोइ वह च्यमदि
जोकोसीउ तोवहदुजेवेतेगजानिमुनि
केवचनसोनेजामानि ॥ १४ ॥
ततहोइ तोकछुसर्वसमभा इतोइ मलिका
गजोसुजितवानजानि २
येवयानि २ जगजपाल ४-
जपहपंचजन्मन्महैंग्रापुज ॥ १५ ॥ जो
ग्राटेनकौन ग्रागपंच रिपतवीसनी
हैंजमे जग वरुजानि वनहोवा
वयानि जिनकेजनदसमेतेनडरि
इहसर्वपातकविचारु
वयानि नामसुउ स्येसुनेजानि ॥ १६ ॥ जि
सपानन्ननसोविसजानि
सोर करत कल्पांनकेजानतेजपाने
मानियेकछुनासंदेजा मरविसु
उपसेइ पनेकाछेसवदनमहेइ

उक्त वेद मात ते रहित जे थे ॥ वे ब्रह्म वर्ण हू जे जाति
ते उत्तम है वेद मात जो मंत्र जाति ॥ याता मुन लव के
जे वर्ण विष हरि विप्र पूजि वे जो प्रपहोइ ॥ ते उज्जवान
मंत्र उत्तम मतु जो ॥ वे शुन ताव को विप्र चोन श्री पू
जन तो किनो निमवोन ॥ जो है जन डो मुंडको शान तो मोन
पूछवे लोग मो ॥ श्रीन मोन उच्च को उ श्रनयो ॥ ले
ले गउवो तुरत सो ॥ श्रुति लिव वान जो गुरी है
श्रो है न ताहि को सा मुफि को ॥ वि नहो समान ॥
नूश्रिजा ॥ श्रद है समान ते ताहि सा नि ॥ हूजो उ
जवो उजल कहा ग ॥ तनो सु जा मि देख्यो ॥ जो इ ॥ श्र
सोन कोइ अप मे कहा ॥ वे दान श्री उ मर ॥ वे पूज
जा ॥ यथ धर्म सा स्त्र रूपी कहत ॥ ताम्हे पवे ॥ के मति मे
हे ताको वेद रूप जो पढ़ ग धो ॥ ता मे सु विप्र तो
सो विद्या रि छ जन्म जन है श्री उत्तम सो ॥ तो निज
कछु उ चार को न ॥ पुप मे धर्म वेद जा नि ते उत्तम
प के श्राग्रा इ को हि कि है ते जा वन है धर्म ते चारत को
शीरि ॥ म वे कउ श्रोर सों मृतवो ताम्है उ श्रापप
य उ ततन सु रीति ना हि के है धारि वि ते मेरु धीन ॥ वि
प्र न उ ताति षि के सुनो को ॥ श्रो है सु कछु के प्यो ति
म होइ ॥ तब वह पाप सत गुनो होइ ॥ रूप को न तो
मे कान को श्रू पात को समान निति को तिजाइ को

हिये जुत हासुरयामि होइ कहिये निजदक्षि
ण्याके स्त्रगा ला स्नवेद मोन जव करै मेरा मुंडन
कराइ जनति हो कालो मनवान कै बहु सादि
न वालन इकचा ति धाम गोधान कीन जोवै सुज
हा सुरया नवी न दूनपा दस तिम तो यमवताइ
मति पद नवे ता को स है बाइ मा नमसुर दमि
न कै हे होइ न की म मान जो ग उ हे उ निज व
नि न धा प दल तो हो इ न न व्यगत बपात सुतो इ
मि हि इ गो ह नि जमै के हत ता कौ नवता बमा ति
म हं ता नि उ मान दुन तो वहे इ ता को न वता वे
न म कि को इ त न हो सु वैट न स्मा प हो इ प दि
गहु त या मि न गा इ हो इ उ धार कत न म व त जो
इ पुनि जन न सुल मा सु का हइ पि सि मे ते नि
मेथे उ पा न ति थि हो इ स्मा न न सु वी र ज द्वि व त
न व हत ज व चन जा धी सु ति नि र ज ल दि वे
इ ज्ञा अ म न मन ता त जि के ते ज ला ज्ञा नि हमे
मयग उ स्मा जु सहो इ आ नि से व ह न व ज ते
हा जो इ न जा वो र या व को न य व व या नि ना तै
सु र दे व कामि ति म हान स म त गुन अ र्प वा ग उ
न गा त न का न श्रा ता को करै सा ग इ मि न ग वि
पुको सा द्धि कीन उ ज ह स स्मा दि के सु न स वी ति

अवसुनौयाहिकोकछुतोश्रीपरतछुपायतैं
श्रा१८।गोवधसुनाइवागिगयौहोश्रीनायक
प्रायश्चितसुनोश्रीप्रजापतिनामव्रतजानौ।अ
छुवतजोगुनव्यानि।१९।दिवसयेकवारभोज
न।प्रतिदिवसहसायसुनिभवौन।दिनरहेत्पारि
काउस्नोश्रीभोजनमतवेकोरिकृतनहेश्री।इकदीव
अजाचीभोजल्लीन।इकदिवसपौनकोहारकोन
दिनतीनकैयेकवारकौभोजदिन
तीनतीनअजाचीभोजलेहि।अहारपौ
यकोहदीनच्यारभोजइकवारकोन।
तीनदीनव्यारिअजाचितेयअन
हारकोजेपवंत।२१।प्राचित्तसरूपउजायतव
राजमस्वासनभोजनकाराग्तश्री।गोगर्भरोकिदी
नववरेकेरिमरिमइहाश्री।येकहेमारवजे
आदानविसमुरभोजदोन।इकदाइतीनवाष्पा
निद्वेयदछिनाविप्रमानितनवरीपवित्रतापाइवीर
राजपृडपकारियेसपीश्रीजवुसिधसूदतान्कोइ
कामैदुनैंकनहिंसंकनाहि।२२।श्रीतिस्त्रीमात
मैमासेषमैचंद्रउदयभीमाहंन्दवन्दसमं
मदयसमंता।।७।।दोहा।।सुरभिनको
बांधनवंधनकोनाबंधनतोहिनजाति

प्रवीन॥१॥ औचतनाऊरोकतगरुनाचेतनकोप
बंधनताकोकहतहैं॥ इहज्ञाननतप्रवीन२॥
द्रु॥ ताकिकआगुरुकेपुष्टकोन॥
ोप्रवीन॥ ताकोसदहकोहियेप्रवीन॥ वादहआर्दैमुने
ज्ञमा॥सि॥ अमदहताडना कहुजानि॥ तनिपापउतर
नकोउपाय॥ सोकहीप्रथमजेहीकराइ॥ गोदतआोडग
नाकरत॥ आचरनकोजेप्रतीमहत॥ नगाउरोकताक
हैकोइ॥ वदपेकताहिकोदतहोइ॥ पुरमीनकजवचन
कराइ॥ दतदोइनागकोकरैताहि॥ फिरकैताडनाग
ज्ञताहि॥ तिहतीनवाटकोदतमानि॥ सोकरैगउकोम
नको॥ दृतनपुढतिपुनिकोलोइ॥ सोददडरगमे
बहिगाइ॥ ताकोसरोकिवोकहैताइ॥ आथउराको
गरन्॥मि॥ अथवासमुझवानदोहमि॥ गाडाजकिंदर
कजनोइ॥ जासब्यगतसोमत्सकहोइ॥ जिनकेंवीच
धरहोटाल॥ दकउदमतीनकीसमाल॥ जेगयेवे
जिवहदरवो॥ वनमातथावरमब्बीर॥ वंवनज
कारिदियोतवैकोइ॥ जातेउगउवहमतकहोइ॥ वग
नमुवधववहुजानिलेज॥ याकेनिमतिकारिजवमा
गोवधमुपापउततनसमाइ॥ ताकेजहेतकारनउपा
४ हननतलेमरनपावतिमुहोइ॥ मरिगयोसकटकै
याकोइ॥ नादतमुवेलनमरिजानधीर॥ वियगयोम

षोर। जे भक्तके जावै जो द्वष भ्रते जाय
ह्लानि लेजाय। मालिक भगउ को भक्त है
रमत बाव रोकहत को इ। चेतन भ्र अचेतन ले
नि। है निना कामना कान भासि। कहि है ख
हाव लिख्यो। जो दंभगउ ने देत न ह। कहि कै
षनयाप्रकार। जो भक्त के हेगइ ति हि वार। प्रति
पात वह पूजा। गि। जाको जन्मवस्थाते
गि। कहि जितन पाश्याते जवीर। भ्रोषदि सु
रिवाइयो। भ्रसनी रते लदेरद से हेत। नेत्र रोग
गरन गाइ। नर के रताहि कि जोउ पाइ।
भ्रमा हि। वाको सुपूर्वको पाप नाहि
भवायो भगाइ। षिटकरसुमा
हि। भसी लइ भाख्वाति हिं जग है।
ग। भरिगइ गउ तो पाप नाहि
देषि निज चित्त माहि। कउभाव
होतै दिवालन तलदवो हो इ। भजा
माहि। इसन सुताहि को नगत नाहि
हीजुद्ध गोत्थम ने जानि। इकबोल नभक्त जो
नि। वहइ डुधनि वारन करत नाहि।
माहि। उजाव्हनै करत भि।
इक भक्त कन भेयो जाको पित्र द्व। इक इक सुवा

इकौ हत्या गाइ । प्राचीनमु सर्वहीकौ नाहि कोहेतु
मानव वारह कोइ । परिहार गऊकौ कल्यो होइ ताके
सुधाव लागि गयो जानि । दहनामु अंगकौ समवृषा
ति जनवतनकथावन रहि नवा । नवतानकवदगी
कारजावी । करि सोतिसहि वसुरनीनमान कारिज
ननवजातकारिये समान । छादिपूर्व अंगकौ समस्तु
जानु नहि जावो अंगमन नेजमानि । अमहीन अंग
रहिगो सुभाइ । तौ गऊघातकौ अर्धताइ प्राप्नितमु
कै चितराकवेत । कविकहै तापवहि धाव हेत ७
हक्कोधजनकारि हैमहार । जनिऔ दंडपासागमा
रि कजालि लोहाथतै देवलाइ । मूर्छा सुधाइकारिप
रीगाइ । गोवधसु पापताको वषानि । प्रतिपापडतर
नकौ रविषानि । चवोरपालन वछासु पालन । हृत्यातम
उपकौ रल्यौ वाल्नु । नहविना उधम रिगयौ होइ हृदे
विसाग नहि मिल्यौ कोइ । पा हेत मारिगयो वछु जानि
पातकसूत्र लोग महानि ८ ओपूरल गऊनेज मूत
न मूरक्षान हायतै स्रतकै ओन । ताकौ उजलनको वै
द कोइ । पातकसुगुन राषि नाहि होइ । यातेउ गऊवको
वधवानि । नहिरवेन गुमलौ हे सुजान ९ गोवध
सुयहिकौ उगुनराषि । तौवा मनुष्यकौ इहै माषि
का लेइ कलेवताम । जिहिनकै मामनवाको सुगा

तत्व कैसी सम्यक उत्कृष्ट पाय । भाषै सुनें केवचिन आइ ॥ १८
वानके माहि नेक्षु टैको इ । उनि महत्व तो कैसे जन्म होइ ॥
जव सात जन्म मनाहीक जैसा तिहिको संयोग गहि है हमे न
२४ । वा हेत पाप परकाम कीन । नहि गुमराह है जेसवा
ना ॥ असत्य तत्व सुख चाल निर्मलते जा । उनि वेदन कदता हि
घात लेजा हि आतके वृक्ष कि छेद लाव । जाते पवित्रता है
महान । कीन्हे उपाव जो गर्व हेत । जैव ल भरी खरा खौ हि
सचेत । वट ये क प्रायश्चित करउ वीर । अस तगारे सम्भवे
न पैधीर । जो वृक्षाव छीपेदा कहोइ । प्रायश्चित सुबाटका
रिये जदोइ । हेमायो अचेतन गर्भगाइ । वाटमुलीन प्रा
यश्चित कराइ । गो वध प्रायश्चित को कोइ । मुंडन करा
वतो जब ही होइ । वट दोइ कोरि प्रायश्चित सु कीन । उडी
र कैसे धारण सबीन । असती न नाग को करत कोइ
तब सौ वा धारणा करउ कोइ । होई निपातन जब ह
गाइ । संउ नको शिखा मुंडन कराइ ॥ २२ ॥ प्रायश्चित सु क
रै येक वट को कोइ । विधा सुदान मेके दोइ । जब क
रोइ कोमति महान । का सौ संपत्र को कैदान । कोउ
कैसी न वट को सुवेस । वैदान वज को कैपेस ॥

उा । दीक्षतसंपन्न

परिपूर्ण अगम तिअगम होइ ६ ।

ताताहिसंगानवउगालितघ्रतवोकेहेउसंग
कह्योपरामसुयासकारगोवाधकोतिनदेत
तिनकीजनसुछतेइच्छुनेसु जिनकी
त्रीवालगउ असंवधहित
वेतु कियजोधदोसहेकेसनाग
उत्याग १२ ॥ इतिश्रीपालसुदेधर्मलालेधर्मवेद
समाप्तं ॥ ब्रह्मन्नसूसल माता ७ ॥
ब्रह्मनाम सुन्दर वं ... ह ... हत हित इह विवि
॥ दोहा ॥ आस्रवरनसुवरनेहेतिनहितइहविवि
सार ॥ १ ॥ पापजेतरनेकोसुविधिकहीनवलीमुवसार १
गंम्यागमसपुरसतहोइ पापउतरनेकोविधिसोइ
चांद्रायनवृतकरेउसुजान जोतहोइववउतककेल्म
न ऋसपद्धिमेइकासयका नासघठागुसहितवि
वेक उकतपादिमेधरेउ नास वठतोकरउायेअ
इकत्राल होइभावसधोममहान निराहारवृतक
रउसुजान वेइय गावृतकोविधीयेहिजोतिर
मीतोनाहिसंदेह कुरकेटकेअउापरमान
सइही परमान श्रीआस्त्रातिथ्यानावसुकोइउइ
इसकोजेजोहोइ वमसुधताक्रवहजानि माप
इनहीमनमानि ॥ २ ॥ मा करव
इयनसंपूरनजोइ वृत्त
... सनपट

होइ सुनि बीरा ॥ उजहे कान सुपाको संग ॥ चंडाली
रत संग ॥ विप्रन कों अपाते पाइ ॥ तीन राति कौ
उपवास करा ॥ मुंडन शिषा समेत कराइ ॥ सांजा
पति व्रत तीन सुना ॥ वस्त्रा कर्चे जे व्रत करे ॥ विप्रन
कौ भोजन दिये ॥ नित गायत्री मंत्र जपत सो
गऊ कौ दान करत ॥ उसतां को दछिना पुनि देहि ॥
होइ सुकता ना हि संदेह ॥ द्वनीत थावे स जो है
॥ चिंडाली संग करि है को इ ॥ तीन प्रजापति व्र
त व माति तीन ग [illegible] सकरि है दान ॥ ७ ॥ वा
सुधा कि चिंडाली होइ ॥ तासो सुजन गजा को
प्रजापति व्रत छ करा ॥ ७
मेघा सुज माता सो वा जगनी होइ
कहिये सोइ ॥ सोह वसी जो संग करा इ ॥ तीन
व्रत कौ सु ना इ ॥ चांद्रायन व्रत
ना ईडी छीन के तत काल
करि संग को तत छिन ईडी संग ॥ तौ
न विप्रन सो निवेदन कीन
वि नि अघ स सो वनाइ
करवाइ ॥ दस व्रत मे गर्ज करि जुगल द
हपाराभुक्करो व याति तब वा को
होइ षरन को सु माची जो जा ॥ पि

जोतियजाति मारै गुरकी तिया सुता ति पुत्र
वधू मित्र तिय होइ मामी गोत्रवधू जो कोइ इन
सो होइ कस्यो जो संग तौ न प्रजापति व्रत आगे
करै दोइ चंद्रायन व्रत होइ सुद्ध संदेह न कछु १
विप्रन को दच्छिना प्रति घाय पांच वृषभ गोदान
कराइ तव ही पापसु निर्मल होइ जैसे दर्पन मा
जो सोइ वहाति मैल है जात सुजोन असे कहे मु
नि वेत गोलगम कौ जो होइ तौ न गति व्रत की
है सोइ गउदान विप्रन को होइ मुहि बीतिया क्षू
करी सेइ इन सो संग कस्यो जो कोइ अहो रात्री
व्रत ते सुद्ध होइ पसुजाति वैस्या तियजाति उष्ट
री अौ रस की भाति इन सो मोह वसो कत .१८
जौ पै संग कस्यो जो को प्रजापति व्रत देह
राइ तव न रवह सुद्धता पाहि १२ डेंस पृगीना
द विचार इनके होइ वजावे न हार उरमोछि का
ल विसेषन छीन असे समय सून प्रवीन वादि
गोह मये मात्र होइ वा समय इन स्पर्शी जाइ
जे विडाल जाति जे चीन लपटल सतो मनन हू की
न गोवर की हू गहरी पंक एक राति तिष्ठि रहे
नि सर्व ये कराति जल वा सकराइ और कछु
विधि सुनौ सुनाइ प्रत्यो सबल नता को मूल प

न्ओरवीकेफलफूला।ह्यओरसुवरनको
क्राथ।ताह्वतन्अचवृनकरियेनाथ।१३।मी
छ्यितपरपूर्वनृजवहोइ।विप्रनतोजेकरा
वेसोइ।दोइगउदछिनामेदेइ।तवहीवहेसु
क्तालेइ।नाथकवीसुरकारिनिउन्मेनायेस
येनृमुनिकेवेन।याअनुमानवरनयेव्यारि
तीनकीतियजनसोनिरधारा।पातकतवेव
रिगयोर्ब।
सोरठ
इनमेंहीव्रतकोफलमाना
।नि।१४।इकवरनोगोमाइ

तो

ताको करवावै उपवास ॥ १६ ॥ आउ रासको कहै ऐसो
ह जाकै गर्भ उतपती होइ अथवा पति उठि गो कहि
सा गौ स्तक हो गयो मर्द सुनाग आगरम सो उतप
ति होइ ताकी मैल मूमाउ तोइ देस निकालै वाको
न पापकर्म ॥ जाको चौन तो पतिकी कौतियाउ
न ताकौ विप्र संग कारि लौन वातियन छूके है सव
इ आवागमन न कछू नहि होइ पिता मात वाआउ रेगो
ह प्रापति जाइ तिया जौ ते है तो व हगोरउ विद्धकरा
इ पंचगव्य ते सुद्ध सुभाय ॥ १७ ॥ स्तिकी मइउ
होइ ताकौ त्याग करै उ... वसत त्यादि का०
वउ नाग सव संचयको करि है ताग तासो का
है तेइ पंचगव्य ते सुद्ध कालै इह जो कासौ
र भस्मो ते सुद्ध कारियै वीर फिर व हजातन को उजरा
ज पापउत्तरनै की विधि साउ विप्र कहै सोइ कालै
उ दोइ गउन को दछिना देइ प्राजापति व्रत करैउ
वाइ और वर ताकौ कहूं ववाय अहो राजा कौ स्त
हलौन पंचगव्य सो सोधन कौन पुत्र मात सउ तासु
पेस विप्रन भोज्य कराव उआवै स वायु आकास सव
न अगनि जल नभ मदसौ आन जापकौ माहि
कित कवहू है नाहि जे उपास वृत हे जग मोइ है
विन्न जानत सव कोइ उजमुख सो जो कस्यो व भांति

रिकेअगामेऊ
होइसुहतामुनगामभाजा॥२०॥इतिश्रीधारा
धानेवेन्दूदूयभासाछन्दबन्दनेवे
॥वसुआमेदमरज॥

॥छन्दबेहरी॥ ऋछवनावनवतम्
कोभावमनवारेग:
भाघोवतहीकोअवस्य

९

कहितुल्यनरककोवामा॥१॥फडअनवाहत
ताकोअनअ
नाजावरजनीकहेअनछमाजावकरी
गेअनकराइ॥वासनापेसोअनमुताइ॥भोज

॥राकियोहोइजोनाहि

॥छन्दबहरी॥

८० त्रै ऐसे मंजार करि रतिये चाहु नवव जात मोदमो
दुराक्रराइ वह होइ सुख संदेह नाहि कोउ सुख्य
सो अन नाउ पकौन नव पंच गध्यते सुछवीन छेत्री
जु ओर एक जावे स्ल होइ भोजन आनो अकजुकास्ये
होइ श्राजापति छत तिमहो कीराइ याते जु सुदतामे
तत आइ कहे पिपूलजा तो सहत कच्चत लिसराज
नूलचेत छताकफल ओर जान लेक्ष गाजर सुजा
तिकाटोमते हा आलउष्ट वृत को गूद माति आस
देवध्यनहि लेजमानि कच्च कारचताम इक ओर
कोइ प्रतिजायचतेटडो को सु होइ प्रति आरमेड
को छी जाति आपपान पते उजलक्ष्यो पान वहती
नराति अपवा सकौन आल पंचगध्य ले सुछवीन ८
छत्री जु वेस्य क्रिया वान होइ छत उपाकिश्र जिनको
सु जोइ वाके अंग हकारि जस देव प्रतिपिश्च के मे
जामे समेद उजराजता हिको कहि तु माइ भोजन
सुकारन उछितवताइ छततेल छीरगुड जसधी
वहसीतती एलेजा जावीर उजराजे सुख को मोड
कौन रस्त रहक्रिये नहिंदो सलौन वहसुखमान
मदिरा सुयाइ आलनिचकर्म कारिहै सु नाइ ऐसे
असुख को हरिपान मंडाल जो मिल्या गजा सुजा तिय (१८
जो सुख कारत उजल को जलेव वराजित सु माल मदिर ३१

।भहिकोउजन जिहाइ।यामेन सकमो
तोनकाम।दा:-अस्पान तभोजनोकजाकीन।जात
कउसूचवामतकचीन।याचितसुवर्नवरनहिवे
मातिकहियेसुवावयासेसुमाति।जोमतकसोचे
मेउजमहान।भोजनसुकीलियोहोइजान।इस
महस्नावकरिमंत्रजापवहिवेदमातकासुनोभ्र
म।तवहीपवित्रताउजमिलंत।कजावेस्पसुजनो
जनकरंत।सतपांचवेदमातासुमंत्र।जपिहेजसुद्
हेतवसुतंत्र।छत्रीउवेस्पकोसुनोजाप।सततीनवे
दमातासुजाप।तवहीपवित्रहेसुनोतह।इसजात
सोचकीजातिलेजा।वासनगाउसोचमेनोअकीन
तवप्रागायामतेसुच्चीन।सतसउजापतेसुदहोइ
इहकजावामसममाइतोइ॥७॥छन्दवेसरी॥ द्
योस्नानछाडिइततेजुजासतगाकेघरमित्योसुम
तावहपाविञभोजनयोभाषि।मानिकोवचनतनेले
योसाषि।याआपतिकालसमेसुनिधीर।भोजनके
असीतोसेन्हूउअसोइसनमतो
गु।ननमन
सवतानिहरंतिनाहूदासमग्वाजूहेमोइाकृते
वि

असत्त महा ना। इन दोउन कौ करि है दान। तोउन न भू
तरवसु करा हि सुजसु छत वही पायो।१३। अस्व हो गति
उपवास महान। सुध चिं डाल कौ करत सुजान। गउ मू
त्र गोवर दधि छीर। घृत सकु सोदिक जान अधीर। पं
च गव्य है याकौ नाम। है पवित्रता कौ इह धाम। कोपा
न स्यो धरे अति नास। पापन कौ करि है नास। गउ मू
असे जो लेइ। तिल समान रंग जाकौ होइ। काली गउ
होइ जग तेइ। गोवर ताही कौ प्रति लेइ। नाम श्वेत सु
रभि ले छीर। सुकल गउ कौ दही सुधीर। कपिला गउ
रहे न घृत कौ नां। पंच गव्य मे सुनो प्रवीन। महापाप
न कौ नष्ट करा हि। असो पंच गव्य जग माहि।१४। मी
रवरन कौ गउ नहा इ। तो कपिला कौ सुध जो इ। गउ मू
त्र पल ये क सु लेय। दधी जानि पल तीन सतेइ। इक
पल हू घृत जानि सुजान। गो मय अर्ध अंगुष्ट प्रमा
न पल जु सात दुध कौ लीन। इक पल ताहि कुसोद
क कीन। पलन कौ कहू प्रमान सुषो लिपि। चौसठि मासा
ताकौ तोलि। इह संपूरन करि इकठौर। न्यारे न्यारे ना
म सु ओर। तिन सौ मंत्रित करउ महान। वरजा रिम
ताइ देह मतिवान। गायत्री मंत्र सुते हि। गउ मूत्र मंत्रि
त करि लेइ। गंध द्वारा मंत्र महान। गोवर मंत्रि तिन कर
उ सुजान।१५। आप्या इस्व। मंत्र सुतेइ। मंत्रित उष्ण

मलैकरिलेइ दधिकामणोमंत्रसुवेस दधिनेमंत्रित
कराहमेस तेजोसीसुक्र: इहमंत्रवताइ घृतनेमं
त्रितकैसुताइ देवसिलामंत्रमतोइ मंत्रितकरअं
गुरि कैडोसप कैपत्लसकोमध्यमपान तासोआवमंत
कराहसुलाति कैवटपत्रसुतोनुमवीर तासोआचवन
करामधीर मंत्रितघृतजाकोप्रातिलेइ करनहवन
आगानिमैतेइ समदत्र दरभोजिहिहोइ अनतमान
हिछिनसोलोइ आनिसोमामंत्रवताइ इहमंत्रसुहव
नकराइ सामित्रीवमंत्रमहोत यासोहवनकराम
तिवान इदंविष्णुर्विचक्रमेयामंत्रसुमानतोप्रातिःक
यामंत्रसु १६ गायत्रीआमहाहतयासु हवनकर
हुतसेसमाहिप्रतिमान हवनक्रियापीछेमंत्रमातिजो
अवसेसरलो आनमाति ताकोपानकराममतिवा
न श्रीडोत्तनवोकारसुकीन उच्चारनवोकारसुती
नयासेफटिठायमवीन तीनवारकरिये उच्चारफे
रिपगविकोजानोसार आचवनतीनवेरकरलेजाय
मेकछुनजानैवेव आतिनमामराभि हीयोपापम
ननदेह विसेषितपाप असेपापमहाननघोर ताकौ
जमातिसुनोआवअोर दुसउत्पत्तजाकरिलेइस
वपापनकोदग्धाकोइ जैसेआगनिकाठकुवाइ राम
तसेपापदग्धहोजाइ पराप्रतोजनकरनिदत ४१

अथवा नीच कर्ननि मैं रत।। जो जगि कार वेला इकै ना इ
ताको समजि अपच्च मन माहि। आधारि जोउ कै उज्ज
ल। कारि चिंतु थन वत को भाजन तब ही होइ स्वच्छ
जजाति। इह निचै करि मन मानि। जे हैं अपच्च जगत
के माहि। तिन को दान समुझिये नाहि। विना दान कुछ प
मत हि होइ। दाता पति भाहत जो दोइ। नर्क पात दोउ म
न मानि। निश्चै लेउ चित मन मानि। भागनि हो तरी है
जगजेइ। सदाचार ह धर्म कैरे।। पंचगव्य ज्यो कौं है नाहि
निवृत के जाणु मन माहि। जा का अन्न को सुणि पेने
वा ने वृत्त न ही करत है देवा।। १९।। पंचगव्य करा हित मृत
जापरा अत मै दानन का लिख। उठि कै भाता नि रंतर होइ
परसुपाकै मैं जेरत जो घृ गेह धर्म मैं वर्तत मानि। वेद मा
मत र वाजित जाति। रिस है जिन कोरे कै सुनि ले ज्ञान
न मारग जो जगत उचा तो गृह चारन न कारि कै हीत अ
रतत कत्या जाइ प्रवीता।। २०।। जो विवाह के समहे के
माहि। मती की पर क्रमणा करा हि। जो न हस्त आप
न पो मानि। वा को अन्न क्या करि मानि। यथा पाक
को मति कर भोग। ने हन अन कारन नाहि जोग। जग
जुग मधि जिमा उजराज। तिन की निंद करत नहि सि
ला। जगजुग के अन रूप वखानि। विप्रन सो इहा मिदो
उंकार। या को नाहि नको उत्तैचार

जो है अगाध बडे है लोग तु कारे न उचारे जोग उन मै
कौ तै उजकाढोर नमस्कार को क्रितनि होहि कैसे म
नइसी विधि सोइ ताहि अवग्याक वृत होइ १९ पै नाव
रि कै ताडना सोइ विप्र कंट कौ जानु सोइ अथवा को
ताडना वास करि विवाद जो तै तिन पास जा कै निसदि
न होइ विकार रुधिर पडै तु मिमा अथवा नासा मै थि
ति होइ ताकी वात सुनु सव कोइ अतिक्रछ्वत कौ जो
कोइ तव पवित्रता ताकी होइ तवदीन जपरयंत सुधो
इ अतिक्रछ्वत कौ जो कोइ तवपवित्रता ताकी होइ
तवदीन जपरयंत सुजोइ अतिक्रछ्वत कौ सव कोइ
पाणी हू जो अंत के होइ अंजुलीत पान जे लो पाइ
इतनु अंत नो जै का लीन कौ उपास रातरी तीन वा
वृत की नी सुनु सुजान गति कछु संपा लौ जे माति २०
सव विमकार पाप जे ग जोइ जो मानुष सौ वागि गो होइ
चा है उन्हे निश्चित के कौन असी विधि जो कै मवीन वे
दमात कौ मंत्र महान जिन कौ जप का वाह सुजान जव
पवित्रता जिम मै पाइ असे नायक ही समझाइ २१॥
इति श्रीपारासुरे धर्मसास्त्रे धर्मसिंधु जोदय भाषायां
... प्रायश्चित्त समाप्त १०॥ दोहा॥ विनव
द कृत वरै सिउ जतन ताकी महिमा मानि जो मै नेहावत एम
पारस कौ उदधि मलान वह जानि १ वाजत ले कै कहि ४२

गतको विलानकातनवको घातौ जाकौ भाजगमैनुरतग
नफलहोइ॥२॥ छंदपद्धरी॥ जे लोगनि मतिड
रुउजाइ जे देवपितृसुर जानुभाइ॥ तिनकौ सम्हह
पवनसपा॥ नगौ संगजातचित्तकियेनूपा॥ भारति
वानिसतेजहोइ॥ जिमितिकटनिकै जातकोइ
तनैसुनीरतलतेसुआइ॥ जपनसुफो रवितहोक
राइ॥ तव तलकधोवतीनहीं निचोर॥ औतौ निचोरिमै
हमोरि॥ सुनदेवपत्रकी रहै बात॥ है कौनि रासफौर
जात॥ अस नान किये वी छुज केस॥ कटकारितहि
बुधवेस॥ जो करै विकृततिके सवोघपापतिसुफ
फलनाहिहै॥ भ्रांति पित्रदेवकी रहैवौना नहोदिये
तनहतकौना॥३॥ जलमामनस्यायलमेरहा
॥ जलतै नलै जलमधजाइ॥ जलमामृपै डोजोर हवै
केसनसमेतवहसुद्धहोइ॥ पानि लानकौ रिकछुपा
कीन॥ अस छीकलियै पीछुभवीन॥ सुताजपछेनो
नकराइ॥ अस रहचलर्यांपीछुकभाइ॥ प्यासुनी
डोनैगजीभ॥ ताविचितिकसहेनरमलीन॥ सुनै
तकेसनसमेत॥ जलकोजपरसकरनौस्वेत

वस्तर नवीन तन मे धरंत पीछ सन्ध्या वंद

रंत। आसन नाक सीट ता नेति छीक अ

ढंत ठीक वाम इ॥ अस्नान किया होइ। विडाल

न कर्यो कोइ रही तौ सकान सपास कोइ तव

वित्र ता मिले आइ॥ ४ ॥ पुस्नान विष्णु शिव नानुजा

आसच्वं दपवन सपूर्णमानि॥ उजरऊँ कानद नो भम

छ्रि इत नावि रजै है इहमासि द्धि॥ ५ ॥

तीके पवित्र। दिन सान स्नान है। जौ गा मित्र आसरे नमा

त्र को जो स्नान। वाकौ आजोगजा नै सुजान। सनि रजे

मसीत जो निसा होइ॥ तिसकौ स्नान नहिं दोस कोइ॥ ६

ति राज दर सा प्रनित्र होइ॥ रहकही वात समम जाते

इ॥ ६ ॥ वसुदेव महत्त गए जानि लेव। ये कादश स्नन स

हित देव। असमान आदि सव देवचीन॥ रहसर्वथा करै

होत लीन॥ थातै इ स्नान कायै महान। अस स्नानदान

जव पवनमानि॥ इनको अनंत फल होत को रजव प

रव सौ मेकर तथोर॥ तिनि ओर आमपथा कडा ता इ॥ मे

अपति आसरी सम मे होइ॥ ता सौ जक डां सव वर जनो क॥

रहकही सुधर्म वस्ताम ठीक॥ संक्रांति समै प्रानि जनमभा

तु कोई करत यत्नौ चित कियौ चाहि ॥ अस गृहन धर्म मै
सुनौ वीर ॥ तिस मध दान कियेसधीर ॥ इह सम सुनि जे
ऊनि जिन चित माहि ॥ भति त्र काउ मैकरै ऊना हि ॥ ७ ॥ उ
नि गृहन सबै अस व्याह काज ॥ अस पुत्र जनम नाम रख
न काज ॥ नमि तिक कसतू स्नान जो यह ॥ तिसि माझ दान क्र
तौ सन तो यह ॥ जो जानै पवित्र ये पंच स्नान ॥ इम कहा उ
वाऊ गुप्तिवान ॥ अग्नी सनान वा सरणी स्नान ॥ ग्रस्त
सनान वायव वस्त्रानि ॥ अल दीअ सनान इह पंच होइ ॥ ज
व के उस रव ससभा औ तौ ऊ ॥ आगम स्नान को इह प्रसा
ऊ जौकरै भसम सौ दिव्य अंग ॥ आपो हि स्टा इह मंत्र जानि
यातै जु करै ग्रस्ती सु मानि ॥ जो करै स्नान गोरज इ येस
वायव स्नान जानह इमेस ॥ उनि उसमै मांझ विनसमैं होइ
सूरज प्रकास जाग जैत जो ऊ ॥ जाव वत घटा मे हवी न
मानि ॥ विन वहत न वरषा होत स्नानि ॥ तामै जो स्नान जो क
रै कोइ ॥ वह दिव्य स्नान ता नाम होइ ॥ ८ ॥ इति श्री पा एउ
रेथ मेमा हे धर्म संजो दय भाषा छन्द बंद एकादशम
सूष समाप्त ११ ॥ छंद बैसरी ॥ घटौ सुपन जो नर कैंको
इ रैन अंत कौ सम इ होइ मैथुन कस्यो होइ चित चाह

सुरकामैआरवोवैजाइ ॥ सतकौउवाजिहिना
यताकामकोपल्योमृगा ॥ उनिपवित्रताचाहैकोइ
नाकियैप्रानिसुद्धीहोइ ॥ जोअज्ञानपनैतैचीनमि
त्रमद्रकारतीनकरैकदाचितमदिरापान
कारकरिजान ॥ उजिनैन्हादिनैरितिहुवर्न
वोहैफिरकर्नो ॥१॥ जोअलमुडसुनोमवकोइ करनीमन
हीसुद्धताहोय ॥ ताकोसुनोसुभगइहरीन प्राजापतिव्र
तकरैसोत ॥ परमेस्वरकोकरिकैध्यान पंचगव्यको
करियेपान ॥ तवहोसुद्धताप्रापतिहोइ ॥ यामेसंकनला
वोकोइ ॥२॥ जलमैडुविकोरिमाहिजा ॥ स्नानयसमन
वतलियोसुचाइ ॥ धारणकियोहोइसंन्यास ॥ फेरप्रान
कीवदगईआस ॥ तोफिरकैसेसुद्धीहोय ॥ याकोनरजा
नताबोमोहि ॥ दोइप्रजापतिव्रतकराइ ॥ तीरथस्नानक
रैचितचाइ ॥ पारायसनदानकरसोइ ॥ तववरननकोसु
द्धीहोइ ॥ अववित्रनकोकरिजवार ॥ वनमैतथाचोहठे
जात ॥ सिषाजुतकमुंडनकरवाइ ॥ तीनप्रजापतिव्रत
कराइ ॥३॥ दोइगऊकोदानकराइ ॥ तवहीसुद्धताहैम
तिभान ॥ योस्वायंभूमनिकोवैन ॥ उनपापानितैसुनिये

ऐसो रहित होत जानौ सबकौ शिवपद तामै प्राप
ति होइ॥४॥ जो शास्त्रनि मै लिखे वीनती तातकै देहोइस
वी नाति तिनद्रके अंत्र भजीका। ज्ञाता तो व सुषपतो जु
ठी क्या रूप कुल औरतियन के माहि। सुकृत्य सुकृत ब
तै है नाहि। भाव वेद को वक्ता होइ है सो विसवता इको
इ। अथवा गृहस्तिया कहिये। ताकौ सुनौ आवै का
य। इनकौ आदि च्यार ये दोस उपजति होइ या विन
हो सो इनकौ प्राचित कैसे होइ। इह आवक सम सुभाव
ज्ञातो होइ॥५॥ जासो कर्म इसो वरा आदि छत्रपान होत्या
गक राइ। उस कृत कर्म कहिये कहाइ। असे मनमै करै
विचार। मह। इनकौ कहा होइ। असे वस्तु घातकी जे
इ। सो दरवाजे मध्ये राषि। असे कहै जगतके वित्ता बि
गोकुल औ गो माता माहि। नाम भगतजन जानौ नाहि
और तपोवृत्ती राषमाहि। नदी सु कृतनाहो इस सोहि
सर्व तीर्थ है जिनके माहि। विचरत पथ कौ लेउ मन माहि
पारावार तीरफो हिंताइ। ऐसे मानिनक हीसमुझाइ द
म जो जिनची डो जियदानि। सो जो जिनन दौपरवाने
रामचंद्र कि आपा पाइ। इनके उसेतकरी चितचाइ द

॥दोहा॥ वासमुद्रकी सेतको जो वौ दरसन पाहि ॥ उ
ब्रह्मसाके पाप सव छिनमे जात विनास्य ॥ ७ ॥ छन्दपद्ध
री ॥ जव वस्सधानमे सुद्ध होइ ॥ जव कौ स्नान महा ढाधि
सु जोइ ॥ उ ब्रह्मसा पर्पते वनिस्याइ ॥ असमेध जगात
स कास्य ॥ कोटि गम्य वासिन्तत स्नान कीन ॥ वह वस
धातकी सुनी प्रवीन ॥ पातक सुन्नपको उ हि होइ ॥ अव
लोक उ सम माइ तोइ ॥ फिरि निज सकौन मे आनन्द
प वसि वानि मताचित किये रूप ॥ अदिग उ नसम अंन
भोजदान ॥ कोिवा इवपति न सहित मानि ॥ उन पुत्र
पदासिन समेत ॥ उज देव भोज वलि किये हेत ॥ व जाव
इ वेद वक्ता महान ॥ सत गडे करावे उन्हे दान ॥ उजराज
करौ कियासुमुरि ॥ उ ब्रह्मसा हत सुधान व जन्त ॥ दोहा ॥
सतजुगमे श्रुतिको कहे चौ धर्म प्रवृत्त सुहोइ ॥ त्रेतामे गोत
म स्मृति धर्म ज्ञान सोइ ॥ ९ ॥ संपालि मत द्वापरी मह
धर्म थापना मानि ॥ पाराशरको हि प्रीत सो केवल कलिजु
ग मानि ॥ १० ॥ या पारासर ग्रंथमे श्लोकन चौतुसत्त जानि
असि अठावन कारि सु जत धर्म समहव बानि ॥ ११ ॥ छं
दनैवंरी ॥ धर्मसार जे या जगमाहि ॥ ताको उजनत ४७

स चित चाहा। ध्यान करै प्रीत सौ कोइ॥ सर्व कामना सं
पति होइ आयौ मै नै कनाहि संदेह। पाराशुर की आपाये
ह॥ दोहा॥ जो कोउ प्रामत्य कौ पढै सुनै चित चाहा। ज्ञा
न रवि के इकपात कौ मै पापप्रलै हो जाइ॥ १२॥ संवत नव
दश डा निधि अष्टादश पहिचानि। पोषमास की त्रय
दशी रविवार मन मानि॥ १३॥ शुक्ल पक्ष शुभ पाइ मै
ग्रंथ समापत कीन। श्रोतन कौ सुख करन है जे जग
परम प्रवीन॥ १४॥ इति श्री पाराशुरे धर्मशास्त्रे धर्मसंव
दे दय भाषा छन्द बन्द द्वादशमध्याय समाप्त॥ १२॥
लिष्य कृतं छोटीलाल जोसी ब्रासी सापपुर को आ
त्मपठिनार्थं श्रावणा इ जी श्री १०८ जुवानी राम जी
मीती आषाढ मासे शुभे शुक्ले पक्षे ८ अष्टम्यां मंद
वासरे संवत् अष्टच त्वारिंशाद्धिकै कोनविंशति स
त संख्या कवदे॥ यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिखितं मया
यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते १॥ शुभमस्तु